CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2011 with Solution PDF-Set 2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: नए युग में विचारों की नई गंगा कहाओ तुम, कि सब कुछ जो बदल दे, ऐसे तूफ़ाँ में नहाओ तुम। अगर तुम ठान लो तो आँधियों को मोड़ सकते हो अगर तुम ठान लो तारे गगन के तोड़ सकते हो, अगर तुम ठान लो तो विश्व के इतिहास में अपने — सुयश का एक नव अध्याय भी तुम जोड़ सकते हो, तुम्हारे बाहुबल पर विश्व को भारी भरोसा है — उसी विश्वास को फिर आज जन-जन में जगाओ तुम। पसीना तुम अगर इस भूमि में अपना मिला दोगे, करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन दिला दोगे। तुम्हारी देह के श्रम-सीकरों में शक्ति है इतनी — कहीं भी धूल में तुम फूल सोने के खिला दोगे। नया जीवन तुम्हारे हाथ का हल्का इशारा है इशारा कर वही इस देश को फिर लहलहाओ तुम। यदि भारतीय नवयुवक दृढ़ निश्चय कर लें तो क्या-क्या कर सकते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में युवाशक्ति और उसके दृढ़ संकल्प की सामर्थ्य का वर्णन है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना कवि कहता है कि युवक ठान लें तो आँधियों की दिशा मोड़ सकते हैं और आकाश के तारे भी तोड़ सकते हैं। ये कथन कठिन से कठिन काम करने की उनकी क्षमता प्रकट करते हैं।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना वे अपने पराक्रम से विश्व के इतिहास में अपने सुयश का नया अध्याय जोड़ सकते हैं। अतः दृढ़ निश्चय उन्हें असाधारण उपलब्धियाँ अर्जित करने और इतिहास बनाने की शक्ति देता है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय नवयुवक दृढ़ निश्चय करके बड़ी बाधाओं को पार कर सकते हैं, असंभव लगने वाले काम कर सकते हैं और विश्व के इतिहास में अपने सुयश का नया अध्याय जोड़ सकते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आँधियाँ मोड़ने और तारे तोड़ने को कठिन कार्यों की सफलता का प्रतीक मानें।

1(ख). नवयुवकों से क्या-क्या करने का आग्रह किया जा रहा है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न काव्यांश में व्यक्त कवि के आग्रह को पहचानने की क्षमता जाँचता है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना कवि युवकों से नए युग के अनुकूल नए विचारों की गंगा बहाने और ऐसे परिवर्तन में सक्रिय होने को कहता है जो पुरानी स्थितियों को बदल दे।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना वह उनसे अपनी शक्ति के प्रति जन-जन का विश्वास फिर जगाने और श्रम द्वारा देश को समृद्ध तथा हरा-भरा बनाने का आग्रह करता है। इसमें विचार, आत्मविश्वास और कर्म तीनों जुड़े हैं।

चरण 3: निष्कर्ष नवयुवकों से नए विचारों का प्रसार करने, परिवर्तन लाने, जन-जन में अपनी शक्ति के प्रति विश्वास जगाने तथा परिश्रम से देश को पुनः समृद्ध और हरा-भरा बनाने का आग्रह किया गया है।

त्वरित सुझाव: कवि के आग्रह पहचानने के लिए काव्यांश में आए कहाओ, जगाओ और लहलहाओ जैसे शब्द देखें।

1(ग). युवक यदि परिश्रम करे तो क्या लाभ होगा? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न युवक के श्रम से समाज और देश को होने वाले लाभ पर केंद्रित है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना कवि के अनुसार युवक अपना पसीना इस भूमि में मिलाएँ तो करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन दे सकते हैं। यहाँ परिश्रम का लाभ केवल व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक भी है।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना उनके श्रम-सीकरों में इतनी शक्ति है कि वे धूल में भी सोने के फूल खिला सकते हैं। इसका तात्पर्य श्रम द्वारा अभावग्रस्त भूमि और समाज को समृद्ध बनाना है।

चरण 3: निष्कर्ष युवकों के परिश्रम से करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन मिलेगा, भूमि समृद्ध होगी और देश फिर हरा-भरा तथा खुशहाल बनेगा।

त्वरित सुझाव: श्रम के लाभ बताते समय दीन-हीनों का नया जीवन और देश की समृद्धि दोनों लिखें।

1(घ). आशय स्पष्ट कीजिए: कहीं भी धूल में तुम फूल सोने के खिला दोगे। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न काव्यपंक्ति के प्रतीकात्मक अर्थ को स्पष्ट करने की क्षमता जाँचता है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना धूल अभाव, उपेक्षा और अनुपयोगी समझी जाने वाली भूमि का संकेत है। सोने के फूल वास्तविक स्वर्ण-पुष्प नहीं, बल्कि बहुमूल्य उपलब्धियों और समृद्धि के प्रतीक हैं।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना कवि युवक के परिश्रम की परिवर्तनकारी शक्ति पर विश्वास करता है। युवक अपनी लगन और श्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों को भी उपयोगी और फलदायी बना सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि युवकों के श्रम में इतनी शक्ति है कि वे साधनहीन और बंजर स्थान को भी उपजाऊ, उपयोगी तथा समृद्ध बना सकते हैं।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में सोने के फूलों का शाब्दिक अर्थ न लेकर समृद्धि और बहुमूल्य सफलता का अर्थ लिखें।

1(ङ). काव्यांश में से कोई एक मुहावरा चुनकर उसका वाक्य-प्रयोग कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के सामान्य अर्थ से अलग, प्रचलित भाव में समझा जाता है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना काव्यांश में आया मुहावरा है “तारे तोड़ना। इसका अर्थ आकाश से वास्तविक तारे उतारना नहीं, बल्कि अत्यंत कठिन या असंभव समझा जाने वाला काम कर दिखाना है।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना वाक्य में ऐसा प्रसंग चुनना चाहिए जिसमें किसी ने असाधारण कठिनाई पर विजय पाई हो। उदाहरण

में संघर्ष और बड़ी उपलब्धि का संबंध स्पष्ट रहना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मुहावरा: तारे तोड़ना। अर्थ: अत्यंत कठिन काम कर दिखाना। वाक्य-प्रयोग: निर्धन परिवार के उस छात्र ने कठिन परिश्रम से सर्वोच्च परीक्षा में प्रथम स्थान पाकर मानो आकाश के तारे तोड़ दिए।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का वाक्य बनाते समय उसकी जगह ऐसा कठिन काम रखें जिसमें बड़ी उपलब्धि दिखाई दे।

2(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: कुछ लोगों को अपने चारों ओर बुराइयाँ देखने की आदत होती है। उन्हें हर अधिकारी भ्रष्ट, हर नेता बिका हुआ और हर आदमी चोर दिखाई पड़ता है। लोगों की ऐसी मनःस्थिति बनाने में मीडिया का भी हाथ है। माना कि बुराइयों को उजागर करना मीडिया का दायित्व है, पर उसे सनसनीख़ेज़ बनाकर 24×7 चैनलों में बार-बार प्रसारित कर उनकी चाहे दर्शक-संख्या (TRP) बढ़ती हो, आम आदमी इससे अधिक शंकालु हो जाता है और यह सामान्यीकरण कर डालता है कि सभी ऐसे हैं। आज भी सत्य और ईमानदारी का अस्तित्व है। ऐसे अधिकारी हैं जो अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानते हैं। ऐसे नेता भी हैं जो अपने हित की अपेक्षा जनहित को महत्त्व देते हैं। वे मीडिया-प्रचार के आकांक्षी नहीं हैं। उन्हें कोई इनाम या प्रशंसा के सर्टीफ़िकेट नहीं चाहिए, क्योंकि उन्हें लगता है कि वे कोई विशेष बात नहीं कर रहे, बस कर्तव्यपालन कर रहे हैं। ऐसे कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों से समाज बहुत-कुछ सीखता है। आज विश्व में भारतीय बेईमानी या भ्रष्टाचार के लिए कम, अपनी निष्ठा, लगन और बुद्धि-पराक्रम के लिए अधिक जाने जाते हैं। विश्व में अग्रणी माने जाने वाले देश का राष्ट्रपति बार-बार कहता सुना जाता है कि हम भारतीयों-जैसे क्यों नहीं बन सकते। और हम हैं कि अपने को ही कोसने पर तुले हैं! यदि यह सच है कि नागरिकों के चरित्र से समाज और देश का चरित्र बनता है, तो क्यों न हम अपनी सोच को सकारात्मक और चरित्र को बेदाग़ बनाए रखने की आदत डालें। उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक संक्षिप्त होते हुए गद्यांश के केंद्रीय विचार को समेटता है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना गद्यांश केवल भ्रष्टाचार की चर्चा नहीं करता। वह हर व्यक्ति को बेईमान समझने की प्रवृत्ति का विरोध करते हुए ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों का अस्तित्व सामने रखता है।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना लेखक अंत में सकारात्मक सोच और बेदाग़ चरित्र अपनाने की प्रेरणा देता है। इसलिए शीर्षक में सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रमुखता देना पूरे गद्यांश की दिशा के अनुरूप है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: "सकारात्मक सोच और कर्तव्यनिष्ठा।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय अंतिम वाक्य में दिए लेखक के संदेश को पूरे गद्यांश के विचार से जोड़ें।

2(ख). लेखक ने क्यों कहा है कि कुछ लोगों को अपने चारों ओर बुराइयाँ देखने की आदत है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न लेखक के कथन का कारण गद्यांश के आधार पर स्पष्ट करने की क्षमता जाँचता है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना कुछ लोग किसी व्यक्ति को उसके वास्तविक आचरण के आधार पर परखने के बजाय पहले से बनी नकारात्मक धारणा से देखते हैं। इसी कारण उन्हें हर अधिकारी भ्रष्ट, हर नेता बिका हुआ और हर आदमी चोर दिखाई देता है। वे कुछ बुरे उदाहरणों से सभी लोगों के बारे में एक जैसा निर्णय कर लेते हैं।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना लेखक इस सामान्यीकरण को अनुचित मानता है, क्योंकि समाज में आज भी सत्यनिष्ठ अधिकारी, जनहित को महत्त्व देने वाले नेता और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक मौजूद हैं। बुराइयों पर लगातार ध्यान देने से लोग इन अच्छे उदाहरणों को नहीं देख पाते। मीडिया की सनसनीपूर्ण प्रस्तुति भी उनकी शंका बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है कि कुछ लोग हर अधिकारी, नेता और सामान्य व्यक्ति को बिना भेद किए भ्रष्ट या बेईमान मान लेते हैं। वे समाज में विद्यमान ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा को अनदेखा करके कुछ बुराइयों को सब पर लागू कर देते हैं।

त्वरित सुझाव: कारण समझाते समय हर अधिकारी, हर नेता और हर आदमी जैसे सामान्यीकरण का उल्लेख करें।

2(ग). लोगों की सोच को बनाने-बदलने में मीडिया की क्या भूमिका है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में बताए मीडिया के प्रभाव और जनमानस की प्रतिक्रिया का संबंध स्पष्ट करता है।
- उत्तर में केवल दिए गए काव्यांश या गद्यांश के विचारों और प्रसंग का आधार लिया जाता है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानना मीडिया बुराइयों को उजागर करके लोगों को समाज की घटनाओं से परिचित कराता है। इसलिए उसका प्रभाव केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रहता; वह लोगों की धारणा और दृष्टिकोण को भी बनाता-बदलता है। गद्यांश में बुराइयों को सामने लाना उसका दायित्व माना गया है।

चरण 2: अर्थ और संबंध स्पष्ट करना परंतु जब चैनल दर्शक-संख्या बढ़ाने के लिए बुराइयों को सनसनीख़ेज़ रूप देकर लगातार दिखाते हैं, तो सामान्य दर्शक अधिक शंकालु हो जाता है। वह कुछ घटनाओं को देखकर यह सामान्यीकरण कर लेता है कि सभी लोग वैसे ही हैं। इस प्रकार बार-बार की एकतरफा प्रस्तुति नकारात्मक सोच को बढ़ाती है और अच्छे लोगों का अस्तित्व ओझल कर देती है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया सूचनाओं की प्रस्तुति से लोगों की सोच बनाता-बदलता है। बुराइयों को उजागर करना उसका दायित्व है, किंतु उन्हें सनसनीख़ेज़ बनाकर बार-बार प्रसारित करने से लोग शंकालु होकर सबको भ्रष्ट या बेईमान मानने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मीडिया के उचित दायित्व और सनसनीपूर्ण प्रस्तुति के नकारात्मक प्रभाव का संबंध बताएँ।

2(घ). अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए कुछ चैनल क्या करते हैं? उसका आम नागरिक पर क्या प्रभाव पड़ता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में चैनलों की प्रस्तुति और उसके प्रभाव के बीच संबंध समझना आवश्यक है।
- उत्तर में चैनलों का कार्य और आम नागरिक पर उसका परिणाम, दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: चैनलों का तरीका कुछ चैनल अपनी दर्शक-संख्या अर्थात टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए समाज की बुराइयों को सनसनीखेज़ रूप देते हैं। वे ऐसी घटनाओं को चौबीसों घंटे चलने वाले चैनलों पर बार-बार प्रसारित करते हैं। लेखक मीडिया के बुराइयाँ उजागर करने के दायित्व को स्वीकार करता है; उसकी आपत्ति उन्हें सनसनी बनाकर लगातार दिखाने पर है।

चरण 2: नागरिक पर प्रभाव ऐसे प्रसारण से आम नागरिक अधिक शंकालु हो जाता है। वह कुछ बुरे लोगों या घटनाओं को देखकर सभी लोगों के विषय में वैसा ही निष्कर्ष निकाल लेता है। फलतः उसे हर अधिकारी भ्रष्ट, हर नेता बिका हुआ और हर आदमी चोर दिखाई देने लगता है। यह अनुचित सामान्यीकरण उसके मन में अविश्वास और नकारात्मक सोच बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कुछ चैनल बुराइयों को सनसनीखेज़ बनाकर बार-बार दिखाते हैं। इससे आम नागरिक शंकालु होकर सभी लोगों को बुरा मानने लगता है।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रश्न में पहले प्रसारण का तरीका लिखें, फिर उससे उत्पन्न शंका और सामान्यीकरण का प्रभाव बताएँ।

2(ङ). 'आज भी सत्य और ईमानदारी का अस्तित्व है' — पक्ष या विपक्ष में अपनी ओर से दो तर्क दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पक्ष या विपक्ष में दिए गए दोनों तर्क स्पष्ट और परस्पर अलग होने चाहिए।
- गद्यांश में सिद्धान्तनिष्ठ अधिकारियों और जनहितैषी नेताओं के उदाहरण कथन के पक्ष को पुष्ट करते हैं।

चरण 1: पहला तर्क: सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा मैं कथन के पक्ष में हूँ। आज भी ऐसे अधिकारी हैं जो अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानते हैं। निजी लाभ के लिए अपने आदर्शों से समझौता न करना ईमानदारी के अस्तित्व का प्रमाण है। गद्यांश में इन अधिकारियों का उल्लेख यह स्पष्ट करता है कि कुछ लोगों के भ्रष्ट आचरण के आधार पर पूरे समाज को बेईमान नहीं कहा जा सकता।

चरण 2: दूसरा तर्क: जनहित और निष्काम कर्तव्यपालन ऐसे नेता और नागरिक भी मौजूद हैं जो अपने हित से ऊपर जनहित को रखते हैं। वे प्रचार, इनाम या प्रशंसा की आकांक्षा के बिना अपना कर्तव्य निभाते हैं। अपने दायित्व को सामान्य जिम्मेदारी मानकर पूरा करना सत्यनिष्ठा का व्यावहारिक रूप है। दूसरों के हित के लिए किया गया यह कर्तव्यपालन दिखाता है कि ईमानदारी केवल विचार नहीं, आज भी आचरण में विद्यमान है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन के पक्ष में दो तर्क हैं: सिद्धान्तों से समझौता न करने वाले अधिकारी आज भी हैं और निजी स्वार्थ से ऊपर जनहित रखने वाले लोग निष्काम भाव से कर्तव्य निभाते हैं।

त्वरित सुझाव: दो तर्क माँगे जाने पर एक ही बात दोहराने के बजाय सिद्धान्तनिष्ठा और जनहित के अलग उदाहरण दें।

2(च). आज दुनिया में भारतीय किन गुणों के लिए जाने जाते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में भारतीयों की विश्वस्तरीय पहचान का स्पष्ट उल्लेख है।
- उत्तर में लेखक द्वारा बताए गए सकारात्मक गुण ही लिखने हैं।

चरण 1: प्रासंगिक अंश पहचानना लेखक कहता है कि विश्व में भारतीय बेईमानी या भ्रष्टाचार के लिए कम और अपनी सकारात्मक विशेषताओं के लिए अधिक जाने जाते हैं। इसलिए उत्तर में बुराइयों की चर्चा को मुख्य आधार नहीं बनाना चाहिए।

चरण 2: गुण स्पष्ट करना भारतीय अपनी निष्ठा, लगन और बुद्धि-पराक्रम के लिए जाने जाते हैं। यहाँ निष्ठा अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्धता और लगन उसे लगातार करने की तत्परता को व्यक्त करती है। बुद्धि-पराक्रम उनकी बौद्धिक क्षमता का परिचायक है।

चरण 3: निष्कर्ष आज दुनिया में भारतीय अपनी निष्ठा, लगन और बुद्धि-पराक्रम के लिए जाने जाते हैं।

त्वरित सुझाव: गद्यांश में गुणों की सूची मिले तो उसी के सभी प्रमुख शब्द उत्तर में शामिल करें।

2(छ). किसी संपन्न देश के राष्ट्रपति का अपने नागरिकों से भारतीयों-जैसा बनने के लिए कहना क्या सिद्ध करता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन का निहितार्थ उसके प्रसंग से निकाला जाता है।
- राष्ट्रपति की टिप्पणी भारतीयों की निष्ठा, लगन और बौद्धिक क्षमता की प्रशंसा के संदर्भ में है।

चरण 1: प्रसंग का आधार गद्यांश में भारतीयों की निष्ठा, लगन और बुद्धि-पराक्रम की चर्चा के तुरंत बाद संपन्न देश के राष्ट्रपति की टिप्पणी आती है। इसलिए इस टिप्पणी का संबंध भारतीयों के इन गुणों से है।

चरण 2: निष्कर्ष का आशय राष्ट्रपति द्वारा अपने नागरिकों को भारतीयों जैसा बनने के लिए कहना सिद्ध करता है कि भारतीयों के गुण विश्व में प्रशंसनीय और अनुकरणीय माने जाते हैं। उनकी प्रतिभा और कर्मनिष्ठा का सम्मान संपन्न देशों में भी है।

चरण 3: निष्कर्ष यह सिद्ध करता है कि भारतीयों की निष्ठा, लगन और बुद्धि-पराक्रम की विश्व में प्रतिष्ठा है और उनके गुण अनुकरणीय माने जाते हैं।

त्वरित सुझाव: कथन का आशय बताते समय उससे ठीक पहले आए गुणों से अपना उत्तर जोड़ें।

2(ज). लेखक भारतीय नागरिकों से क्या अपेक्षा करता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक की अपेक्षा गद्यांश के अंतिम विचार में व्यक्त होती है।
- सोच और चरित्र, दोनों से जुड़ी अपेक्षाओं को उत्तर में रखना चाहिए।

चरण 1: अपेक्षा का आधार लेखक का मानना है कि नागरिकों के चरित्र से समाज और देश का चरित्र बनता है। इसलिए समाज को अच्छा बनाने के लिए प्रत्येक नागरिक को स्वयं अपने विचार और आचरण सुधारने चाहिए।

चरण 2: अपेक्षा स्पष्ट करना लेखक चाहता है कि भारतीय नागरिक केवल अपनी बुराइयाँ गिनाकर स्वयं को कोसते न रहें। वे अपनी सोच सकारात्मक बनाएँ और अपने चरित्र को बेदाग़ रखने की आदत डालें। इस तरह उनका व्यक्तिगत सुधार देश के चरित्र को भी बेहतर बनाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक भारतीय नागरिकों से अपेक्षा करता है कि वे अपनी सोच सकारात्मक बनाएँ और चरित्र को बेदाग़ रखने की आदत डालें।

त्वरित सुझाव: लेखक की अपेक्षा पूछने पर अंतिम पंक्तियों में दिए गए सुझाव या आह्वान को पहचानें।

2(झ). प्रत्यय अलग कीजिए — नागरिक, ईमानदारी। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यय मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है।
- प्रत्यय अलग करते समय मूल शब्द और जुड़ा हुआ अंतिम अंश दोनों दिखाने चाहिए।

चरण 1: नागरिक का विभाजन नागरिक शब्द नगर से बना है। इसमें इक प्रत्यय जुड़ा है। प्रत्यय जुड़ने पर मूल के स्वर में परिवर्तन होकर नगर का रूप नागर हो जाता है। इसलिए शब्द का विश्लेषण नगर + इक = नागरिक है; केवल अंतिम क को प्रत्यय मानना उचित नहीं है।

चरण 2: ईमानदारी का विभाजन ईमानदारी में मूल शब्द ईमानदार है और उसके अंत में ई प्रत्यय जुड़ा है। इस प्रकार ईमानदार + ई = ईमानदारी। यहाँ पूछा गया प्रत्यय ई है; दार को अलग करना ईमानदार शब्द की रचना का विश्लेषण होगा।

चरण 3: निष्कर्ष नागरिक: नगर + इक; प्रत्यय—इक। ईमानदारी: ईमानदार + ई; प्रत्यय—ई।

त्वरित सुझाव: प्रत्यय पहचानते समय अंतिम अक्षर काटने के बजाय मूल शब्द और बने हुए शब्द का संबंध देखें।

2(ञ). उपसर्ग अलग कीजिए — बेदाग़, अधिकारी। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करता है।
- विभाजन में आरंभिक उपसर्ग और शेष शब्द को अलग दिखाना चाहिए।

चरण 1: बेदाग़ का विभाजन बेदाग़ शब्द में दाग़ से पहले बे उपसर्ग जुड़ा है। बे का अर्थ रहित या बिना है। इस प्रकार बे + दाग़ = बेदाग़, अर्थात जिस पर दाग़ न हो। अतः इसमें उपसर्ग बे है।

चरण 2: अधिकारी का विभाजन अधिकारी शब्द में अधि उपसर्ग है। इसे अधि + कारी के रूप में अलग किया जा सकता है। शब्द की शुरुआत में अधि पहचानना आवश्यक है; केवल अ को अलग करने से इस शब्द का उपसर्ग सही रूप में नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष बेदाग़: बे + दाग़; उपसर्ग—बे। अधिकारी: अधि + कारी; उपसर्ग—अधि।

त्वरित सुझाव: उपसर्ग को शब्द के आरंभ में खोजें और जाँचें कि वह अर्थपूर्ण शब्दरचना से मेल खाता है।

2(ट). सरल वाक्य में बदलिए — ऐसे अधिकारी हैं जो अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानते हैं। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सरल वाक्य में एक ही मुख्य उपवाक्य रहता है।
- मिश्र वाक्य के आश्रित उपवाक्य को पदबंध में बदलने पर मूल अर्थ सुरक्षित रहना चाहिए।

चरण 1: आश्रित उपवाक्य पहचानना दिए गए वाक्य में ऐसे अधिकारी हैं मुख्य उपवाक्य है और जो अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानते हैं आश्रित उपवाक्य है। जो शब्द दोनों को जोड़ रहा है। सरल वाक्य बनाने के लिए इस आश्रित उपवाक्य को विशेषण पदबंध में बदलना होगा।

चरण 2: पदबंध बनाकर वाक्य लिखना जो अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानते हैं के स्थान पर अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानने वाले लिखा जाएगा। इससे अधिकारियों की वही विशेषता बनी रहती है और अलग आश्रित उपवाक्य हट जाता है। पूरा वाक्य है: अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानने वाले अधिकारी हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सरल वाक्य: अपने सिद्धान्तों को रोज़ी-रोटी से बड़ा मानने वाले अधिकारी हैं।

त्वरित सुझाव: जो से आरंभ होने वाले विशेषण उपवाक्य को मानने वाले जैसे पदबंध में बदलकर अर्थ की जाँच करें।

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: (क) मेरा प्रिय एफ.एम. चैनल (ख) राष्ट्रमंडल-खेलों में भारतीयों का प्रदर्शन (ग) बाढ़ की विभीषिका (घ) वैर नहीं, मैत्री करना सिखाते हैं धर्म [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- व्यक्तिगत रुचि वाले विषय में अनुभव, समसामयिक विषय में तथ्य और सामाजिक विषय में कारण, प्रभाव तथा उपाय प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना परीक्षा में दिए गए विषयों में से एक चुना जाएगा। अभ्यास के लिए चारों के नमूना निबंध नीचे

दिए गए हैं। पहले विषय में चैनल की विशेषताएँ और उपयोगिता, दूसरे में खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ और भविष्य की जरूरतें, तीसरे में बाढ़ के कारण तथा बचाव और चौथे में धार्मिक सद्भाव को आधार बनाया गया है। प्रत्येक निबंध का शीर्षक, आरंभ, विस्तार और निष्कर्ष परस्पर जुड़े हैं।

चरण 2: (क) मेरा प्रिय एफ.एम. चैनल मेरा प्रिय एफ.एम. चैनल

रेडियो मनोरंजन और जानकारी का सुलभ साधन है। अनेक एफ.एम. चैनलों में मुझे आकाशवाणी का एफ.एम. रेनबो सबसे अधिक पसंद है। इसके कार्यक्रम संगीत के साथ उपयोगी जानकारी भी देते हैं। इसे सुनकर मेरा मन प्रसन्न होता है और खाली समय का अच्छा उपयोग होता है।

इस चैनल पर पुराने और नए गीतों का संतुलित चयन मुझे विशेष रूप से आकर्षित करता है। पुराने गीतों में भावों की गहराई मिलती है, जबकि नए गीत आज की पीढ़ी की रुचियों से परिचित कराते हैं। प्रस्तुतकर्ताओं की सहज भाषा और आत्मीय शैली सुनने वाले को कार्यक्रम से जोड़ती है। श्रोताओं की पसंद के गीत सुनना भी आनंददायक अनुभव है।

रेडियो सुनने का एक लाभ यह है कि इसके लिए लगातार पर्दे को देखने की आवश्यकता नहीं होती। घर के छोटे काम करते समय भी कार्यक्रम सुने जा सकते हैं। परिवार के साथ सुना गया अच्छा संगीत पीढ़ियों के बीच संवाद का अवसर देता है। फिर भी पढ़ाई के समय संगीत सुनकर ध्यान बाँटना उचित नहीं है।

मुझे वही कार्यक्रम अच्छे लगते हैं जिनकी भाषा शिष्ट और सामग्री स्वस्थ हो। अनावश्यक शोर तथा लंबे विज्ञापन कार्यक्रम का आनंद कम करते हैं। मेरा प्रिय चैनल मेरे लिए केवल गीतों का माध्यम नहीं, बल्कि दिनचर्या में ताजगी लाने वाला साथी है।

चरण 3: (ख) राष्ट्रमंडल-खेलों में भारतीयों का प्रदर्शन राष्ट्रमंडल-खेलों में भारतीयों का प्रदर्शन

दिल्ली में आयोजित 2010 के राष्ट्रमंडल-खेल भारतीय खेल-जगत के लिए महत्त्वपूर्ण अवसर थे। अपने देश में अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता होने से खिलाड़ियों को घरेलू दर्शकों का उत्साह मिला। भारतीय खिलाड़ियों ने अनेक स्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके देश का गौरव बढ़ाया।

निशानेबाजी, कुश्ती, मुक्केबाजी और भारोत्तोलन जैसी स्पर्धाओं में भारतीय प्रतिभा दिखाई दी। साइना नेहवाल की बैडमिंटन में सफलता ने युवाओं को प्रेरित किया। महिला खिलाड़ियों की उपलब्धियों ने यह भी सिद्ध किया कि अवसर और प्रशिक्षण मिलने पर वे किसी से पीछे नहीं हैं। पदकों के पीछे वर्षों का अभ्यास, अनुशासन और कठिन परिश्रम था।

इन सफलताओं को केवल उत्सव तक सीमित नहीं रखना चाहिए। बहुत से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को पर्याप्त मैदान, प्रशिक्षक और उपकरण नहीं मिलते। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाएँ बढ़ाना और विद्यालयों में खेलों को प्रोत्साहन देना आवश्यक है। खिलाड़ियों को पौष्टिक भोजन, चिकित्सा और आर्थिक सुरक्षा भी मिलनी चाहिए। चयन प्रक्रिया निष्पक्ष हो और खेल संस्थाओं में जवाबदेही बनी रहे।

भारतीयों का प्रदर्शन आशा जगाता है, लेकिन स्थायी प्रगति लगातार तैयारी से ही होगी। जीत का सम्मान करने के साथ हार से सीखना भी खेल भावना है। यदि उभरती प्रतिभाओं को सही मार्गदर्शन मिले, तो देश आने वाली प्रतियोगिताओं में और बेहतर प्रदर्शन कर सकता है।

चरण 4: (ग) बाढ़ की विभीषिका बाढ़ की विभीषिका

जल जीवन का आधार है, परंतु वही जल अनियंत्रित होकर विनाश का कारण बन जाता है। नदी का पानी जब किनारों को पार करके बस्तियों और खेतों में फैलता है, तो बाढ़ आती है। अतिवृष्टि इसका प्रमुख प्राकृतिक कारण है। वनों की कटाई, जलनिकासी में बाधा और नदियों के तटों पर अतिक्रमण इसकी गंभीरता बढ़ाते हैं।

बाढ़ में घर बह जाते हैं, खेतों की फसल नष्ट हो जाती है और पशुधन की हानि होती है। सड़कें टूटने तथा यातायात रुकने से राहत पहुँचाना कठिन हो जाता है। सबसे अधिक कठिनाई बच्चों, वृद्धों और रोगियों को होती है। लोग अपना घर छोड़कर अस्थायी शिविरों में रहने को विवश हो जाते हैं। पीने के स्वच्छ पानी और भोजन की कमी जीवन को संकट में डाल देती है।

पानी उतरने के बाद भी पीड़ा समाप्त नहीं होती। गंदगी और दूषित जल से बीमारियाँ फैल सकती हैं। प्रभावित परिवारों को फिर से घर बसाने और आजीविका शुरू करने में लंबा समय लगता है। ऐसे समय समाज को सहयोग और संवेदना दिखानी चाहिए।

बाढ़ से बचाव के लिए समय पर चेतावनी, सुरक्षित निकासी और राहत की तैयारी जरूरी है। तटबंधों की देखभाल, जलनिकासी की व्यवस्था और वृक्षारोपण पर ध्यान देना चाहिए। नदियों के प्राकृतिक मार्गों को सुरक्षित रखकर तथा योजनाबद्ध निर्माण अपनाकर क्षति घटाई जा सकती है। प्रकृति के साथ संतुलन और सजग प्रशासन ही इस विभीषिका का प्रभाव कम कर सकते हैं।

चरण 5: (घ) वैर नहीं, मैत्री करना सिखाते हैं धर्म वैर नहीं, मैत्री करना सिखाते हैं धर्म

धर्म मनुष्य को सदाचार, करुणा और सेवा की प्रेरणा देता है। पूजा-पद्धतियाँ अलग हो सकती हैं, लेकिन सत्य, प्रेम और मानवता जैसे मूल्य सभी के जीवन को बेहतर बनाते हैं। धर्म का उद्देश्य मनुष्यों के बीच दीवार खड़ी करना नहीं, उनके आचरण को उदार बनाना है।

भारत में विविध धर्मों के लोग साथ रहते हैं। एक-दूसरे के त्योहारों में भाग लेना, संकट में सहायता करना और पड़ोसी के सुख-दुख में साथ देना हमारी साझी संस्कृति के सुंदर उदाहरण हैं। भूखे को भोजन देना या पीड़ित की सहायता करना किसी एक समुदाय तक सीमित कर्तव्य नहीं है। मानवीय संवेदना हमें सभी के प्रति उत्तरदायी बनाती है।

कभी-कभी स्वार्थी लोग धार्मिक भावनाओं का दुरुपयोग करके तनाव फैलाते हैं। अफवाहें और कट्टरता आपसी विश्वास को क्षति पहुँचाती हैं। ऐसे समय विवेक से काम लेना चाहिए। किसी व्यक्ति के गलत आचरण के लिए पूरे समुदाय को दोष देना अनुचित है। संवाद, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान से गलतफहमियाँ दूर की जा सकती हैं।

विद्यालय और परिवार बच्चों में विविधता के प्रति आदर पैदा करें। हमें अपने धर्म का पालन करते हुए दूसरों की आस्था का सम्मान करना चाहिए। सच्ची धार्मिकता का प्रमाण बाहरी प्रदर्शन से अधिक हमारे व्यवहार में मिलता है। जब मनुष्य दूसरे की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझता है, तभी धर्म की मैत्री और मानवता की शिक्षा सार्थक होती है।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों में केंद्रीय विचार को परिचय, क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार के साथ प्रस्तुत किया गया है। परीक्षा में चुने हुए एक विषय पर इसी प्रकार सुसंगत निबंध लिखना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले विषय के मुख्य विचार लिख लें; फिर हर अनुच्छेद में एक विचार विकसित करें और अंतिम अनुच्छेद में उसी विषय से जुड़ा निष्कर्ष दें।

---

4. बढ़-चढ़कर दावा करने वाले और भ्रामक प्रचार करने वाले विज्ञापनों से ग्राहकों, उपभोक्ताओं को होने वाली परेशानी का उल्लेख करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। दो सुझाव भी लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखे पत्र में सार्वजनिक समस्या, उसका प्रभाव और व्यावहारिक समाधान शिष्ट तथा स्पष्ट भाषा में रखे जाते हैं।
- औपचारिक पत्र का क्रम है: प्रेषक का पता, तिथि, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य, समापन और नाम।

चरण 1: पत्र की योजना यह पत्र भ्रामक विज्ञापनों से होने वाली आर्थिक हानि, गलत अपेक्षाओं और उपभोक्ता की परेशानी को सामने रखेगा। किसी अप्रमाणित ब्रांड पर आरोप लगाने के स्थान पर समस्या का सामान्य और तथ्यपूर्ण उल्लेख किया जाएगा। अंत में दो स्पष्ट सुझाव होंगे: विज्ञापन के दावों की जाँच तथा उपभोक्ताओं की जागरूकता और शिकायत की व्यवस्था। संपादक से इस विषय को समाचार-पत्र में स्थान देने का अनुरोध किया जाएगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना पत्र 25, विकास नगर
नई दिल्ली
18 मार्च, 2011
सेवा में
संपादक महोदय
दैनिक जनवाणी
नई दिल्ली
विषय: भ्रामक विज्ञापनों से उपभोक्ताओं को होने वाली परेशानी।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं संबंधित अधिकारियों और पाठकों का ध्यान बढ़ा-चढ़ाकर दावे करने वाले विज्ञापनों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। अनेक विज्ञापन किसी वस्तु की उपयोगिता को अतिरंजित रूप में प्रस्तुत करते हैं। कभी आवश्यक शर्तें बहुत छोटे अक्षरों में लिखी जाती हैं, तो कभी आकर्षक छूट का वास्तविक मूल्य खरीदारी के समय पता चलता है।

इनसे प्रभावित होकर ग्राहक ऐसी वस्तुएँ खरीद लेते हैं जो उनकी अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरतीं। उनकी मेहनत की कमाई व्यर्थ जाती है। सामान लौटाने या शिकायत करने पर भी उन्हें बार-बार चक्कर लगाने पड़ते हैं। स्वास्थ्य संबंधी अप्रमाणित दावे उपभोक्ताओं को अनुचित निर्णय लेने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं।

इस समस्या के समाधान के लिए मेरे दो सुझाव हैं। पहला, संबंधित अधिकारी विज्ञापनों के दावों की प्रमाण सहित जाँच करें और गलत दावा करने वालों पर उचित कार्रवाई करें। कीमत, शर्तें और सीमाएँ स्पष्ट अक्षरों में देना अनिवार्य बनाया जाए। दूसरा, समाचार-पत्र और अन्य माध्यम उपभोक्ता-जागरूकता अभियान चलाएँ तथा शिकायत करने की प्रक्रिया सरल भाषा में बताएँ, ताकि ग्राहक प्रमाण सँभालकर अपने अधिकारों का उपयोग कर सकें।

कृपया इस विषय को अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर जनहित में आवश्यक कदम उठाने की ओर ध्यान दिलाएँ।

धन्यवाद।

भवदीय

अभय कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में भ्रामक प्रचार से होने वाली परेशानी स्पष्ट की गई है तथा दावों की जाँच और उपभोक्ता-जागरूकता से संबंधित दो व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: दो सुझाव अलग क्रमसूचक शब्दों से लिखें और संपादक से समस्या को समाचार-पत्र में उठाने का अनुरोध अवश्य करें।

अथवा

4. अपने पसंदीदा कार्यक्रम की चर्चा करते हुए उस टी.वी. चैनल के कार्यक्रम निदेशक को पत्र लिखकर कार्यक्रम को और अधिक आकर्षक बनाने के दो सुझाव दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कार्यक्रम निदेशक को लिखा जाने वाला यह औपचारिक पत्र है। इसमें पसंदीदा कार्यक्रम की उपयोगिता बताकर उसके सुधार के लिए व्यावहारिक सुझाव दिए जाते हैं।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य विषयवस्तु, समापन और हस्ताक्षर का क्रम रखा जाता है। भाषा विनम्र और स्पष्ट होनी चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना पहले अपना पता और दिनांक लिखें। उसके बाद कार्यक्रम निदेशक का पद, चैनल का नाम तथा पता लिखें। विषय में पसंदीदा कार्यक्रम को अधिक आकर्षक बनाने का संकेत दें। मुख्य भाग में कार्यक्रम का नाम और पसंद आने का कारण बताएं। फिर दो अलग-अलग, उपयोगी और लागू किए जा सकने वाले सुझाव दें। अंत में सुझावों पर विचार करने का अनुरोध करें।

चरण 2: सुझावों का चयन उदाहरण के लिए विज्ञान पर आधारित कार्यक्रम चुना जा सकता है। उसे आकर्षक बनाने का पहला सुझाव सरल प्रयोगों और सजीव प्रदर्शनों को बढ़ाना है। दूसरा सुझाव दर्शकों के प्रश्नों तथा जिज्ञासाओं को कार्यक्रम में स्थान देना है। दोनों सुझाव कार्यक्रम की शैक्षिक उपयोगिता और दर्शकों की भागीदारी बढ़ाते हैं। अनावश्यक आलोचना या अस्पष्ट प्रशंसा से बचना चाहिए।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली–110059
18 मार्च, 2011
सेवा में,
कार्यक्रम निदेशक
दूरदर्शन
नई दिल्ली
विषय: विज्ञान कार्यक्रम को अधिक आकर्षक बनाने के संबंध में।

महोदय,
मैं आपके चैनल पर प्रसारित विज्ञान कार्यक्रम का नियमित दर्शक हूँ। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिक तथ्यों को सरल भाषा में समझाया जाता है। इससे विद्यार्थियों की जिज्ञासा बढ़ती है और दैनिक जीवन में विज्ञान के महत्त्व का पता चलता है। विशेषज्ञों की बातचीत भी ज्ञानवर्धक होती है।
कार्यक्रम को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए मेरे दो सुझाव हैं। पहला, वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझाते समय सरल प्रयोगों और सजीव प्रदर्शनों का अधिक प्रयोग किया जाए। घर में उपलब्ध वस्तुओं से किए जा सकने वाले प्रयोग दिखाने से विद्यार्थी स्वयं भी उन्हें आजमा सकेंगे।
दूसरा, प्रत्येक कड़ी में दर्शकों के प्रश्नों के लिए समय रखा जाए। विद्यार्थियों से पत्र द्वारा प्रश्न मँगाकर विशेषज्ञों से उनके उत्तर दिलवाए जाएँ। इससे दर्शकों की भागीदारी बढ़ेगी और उनकी वास्तविक जिज्ञासाओं का समाधान होगा।
आशा है, आप इन सुझावों पर विचार करेंगे और कार्यक्रम को अधिक रोचक तथा उपयोगी बनाएँगे।
धन्यवाद।
भवदीय
अभय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष कार्यक्रम की उपयोगिता स्पष्ट करते हुए सरल प्रयोगों के अधिक प्रदर्शन तथा दर्शकों के प्रश्नोत्तर को स्थान देने के दो सुझाव विनम्र औपचारिक पत्र में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: पत्र में कार्यक्रम की चर्चा के बाद दोनों सुझाव अलग अनुच्छेदों में लिखें और प्रत्येक का लाभ भी स्पष्ट कर दें।

5(क)(i). संक्षेप में उत्तर लिखिए: पीत पत्रकारिता किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता का उद्देश्य सत्यापित तथ्य देकर जनहित की सूचना देना है। पीत पत्रकारिता इस दायित्व से हटकर सनसनी को प्रधानता देती है।
- इसकी पहचान बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए गए, उत्तेजक या अपुष्ट समाचार और सस्ती लोकप्रियता की प्रवृत्ति है।

चरण 1: प्रवृत्ति की पहचान केवल रोचक समाचार प्रकाशित करना पीत पत्रकारिता नहीं है। जब तथ्य की विश्वसनीयता और जनहित की उपेक्षा करके लोगों को चौंकाना या भड़काना प्रमुख उद्देश्य बन जाए, तब यह प्रवृत्ति दिखाई देती है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर सनसनी फैलाने, अफवाहों या अपुष्ट बातों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने और सस्ती लोकप्रियता या बिक्री बढ़ाने के उद्देश्य से की जाने वाली गैरजिम्मेदार पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पीत पत्रकारिता सस्ती लोकप्रियता के लिए तथ्यों और जनहित की उपेक्षा करके सनसनी फैलाने वाली पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सनसनी, अपुष्ट तथ्य और सस्ती लोकप्रियता का संबंध स्पष्ट करें।

5(क)(ii). संपादक के दो प्रमुख उत्तरदायित्वों का उल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक प्रकाशन की सामग्री के चयन और संपादन का प्रमुख उत्तरदायी होता है। वह समाचार की विश्वसनीयता तथा प्रस्तुति का स्तर बनाए रखता है।
- पत्रकारीय नैतिकता और जनहित संपादकीय निर्णय के आवश्यक आधार हैं।

चरण 1: समाचार की गुणवत्ता सुनिश्चित करना पहला उत्तरदायित्व समाचारों और लेखों का उचित चयन तथा संपादन करना है। संपादक तथ्य, भाषा और प्रस्तुति की शुद्धता जाँचता है, ताकि पाठक तक स्पष्ट और विश्वसनीय सूचना पहुँचे।

चरण 2: जनहित और मर्यादा का ध्यान रखना दूसरा उत्तरदायित्व प्रकाशन की नीति तथा पत्रकारिता की नैतिक मर्यादाओं के अनुरूप सामग्री प्रकाशित कराना है। उसे निष्पक्षता और जनहित का ध्यान रखते हुए भ्रामक, निराधार या गैरजिम्मेदार सामग्री से बचाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक के दो प्रमुख उत्तरदायित्व हैं: सामग्री का चयन-संपादन करके उसकी तथ्यात्मक शुद्धता सुनिश्चित करना तथा जनहित और पत्रकारीय नैतिकता की रक्षा करना।

त्वरित सुझाव: दो उत्तरदायित्व अलग-अलग लिखें: एक सामग्री की शुद्धता का और दूसरा जनहित तथा नैतिकता का।

5(क)(iii). 'समाचार' शब्द को परिभाषित कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार में किसी ताजा घटना या परिवर्तन की जानकारी दी जाती है। उसका पाठकों या श्रोताओं के लिए महत्त्व और रुचि होना आवश्यक है।
- प्रामाणिकता समाचार को अफवाह से अलग करती है; इसमें तथ्यों की पुष्टि का महत्त्व है।

चरण 1: आवश्यक तत्त्व पहचानना हर घटना समाचार नहीं बनती। ऐसी हाल की घटना, विचार या समस्या, जिसके बारे में जानना लोगों के लिए उपयोगी या रुचिकर हो, समाचार का विषय बन सकती है। उसकी सूचना तथ्यपरक और सत्यापित होनी चाहिए।

चरण 2: परिभाषा प्रस्तुत करना किसी ताजा, महत्त्वपूर्ण और जनरुचि से संबंधित घटना, विचार या समस्या की सत्यापित तथा तथ्यपरक सूचना को समाचार कहते हैं। इसमें सूचना की नवीनता के साथ उसकी सार्वजनिक उपयोगिता भी निहित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार किसी ताजा, महत्त्वपूर्ण और जनरुचि की घटना या विषय की सत्यापित, तथ्यपरक सूचना है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में ताजगी, जनरुचि और तथ्यपरकता अवश्य जोड़ें; केवल घटना का वर्णन न लिखें।

5(क)(iv). मुद्रित माध्यम की एक विशेषता बताइए जो इलैक्ट्रॉनिक माध्यम में नहीं है। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में सामग्री कागज पर लिखित रूप में उपलब्ध रहती है। पाठक उसे पढ़ने की गति और क्रम स्वयं तय कर सकता है।
- प्रश्न का आशय रेडियो और टेलीविजन के सामान्य प्रसारण से तुलना करना है, जिसमें कार्यक्रम अपने निर्धारित समय और गति से चलता है।

चरण 1: पाठक के नियंत्रण को पहचानना समाचार-पत्र या पत्रिका पढ़ते समय पाठक किसी अंश पर ठहर सकता है, कठिन वाक्य दोबारा पढ़ सकता है और पहले पढ़े अंश पर लौट सकता है। उसे प्रसारण की गति के साथ चलने की बाध्यता नहीं होती।

चरण 2: एक विशिष्ट विशेषता लिखना मुद्रित सामग्री को पाठक अपनी सुविधा और अपनी गति से बार-बार पढ़ सकता है। रेडियो या टेलीविजन के सामान्य सीधे प्रसारण में सामग्री प्रसारक की निर्धारित गति से आगे बढ़ती है; पाठक जैसी तत्काल वापसी की सुविधा नहीं मिलती।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित माध्यम की विशेषता यह है कि पाठक सामग्री को अपनी सुविधा, समय और गति के अनुसार बार-बार पढ़ सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का केंद्र पाठक का गति और पुनर्पाठ पर नियंत्रण रखें; केवल कागज पर छपना न बताएं।

5(क)(v). इंटरनेट पत्रकारिता की लोकप्रियता के दो कारण बताइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट पत्रकारिता कंप्यूटर या अन्य इंटरनेट-सक्षम उपकरण से समाचार उपलब्ध कराती है। इसमें सूचना जल्दी अद्यतन की जा सकती है।
- पाठक केवल सूचना प्राप्त नहीं करता, बल्कि प्रतिक्रिया देकर संवाद में भी भाग ले सकता है।

चरण 1: त्वरित उपलब्धता लोकप्रियता का पहला कारण समाचारों की त्वरित और निरंतर उपलब्धता है। घटनाओं के समाचार शीघ्र प्रकाशित और अद्यतन किए जा सकते हैं। पाठक इंटरनेट के माध्यम से अपनी सुविधा के समय कहीं से भी उन्हें पढ़ सकता है।

चरण 2: अंतःक्रियात्मकता दूसरा कारण पाठकों की सक्रिय भागीदारी है। वे समाचार पर अपनी प्रतिक्रिया या टिप्पणी दे सकते हैं तथा प्रश्न पूछ सकते हैं। यह संवाद की सुविधा समाचार माध्यम और पाठक के बीच संपर्क बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पत्रकारिता की लोकप्रियता के दो कारण हैं: समाचारों की त्वरित तथा निरंतर उपलब्धता और प्रतिक्रिया देने की अंतःक्रियात्मक सुविधा।

त्वरित सुझाव: दो अलग कारण गिनाएँ: सूचना कितनी जल्दी मिलती है और पाठक उसमें किस प्रकार भाग ले सकता है।

5(ख). 'युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति' अथवा 'किसानों की समस्याओं की अनदेखी' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय का तार्किक और तथ्यपरक विवेचन किया जाता है। शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, समस्या का विश्लेषण और समाधान इसके मुख्य अंग हैं।
- प्रश्न के दोनों वैकल्पिक विषयों के लिए अलग-अलग आदर्श आलेख दिए गए हैं। कारण, प्रभाव और उपायों का क्रम विचारों को स्पष्ट बनाता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले विषय में नशे के आकर्षण के कारण, स्वास्थ्य एवं परिवार पर उसके प्रभाव और रोकथाम के उपाय रखेंगे। दूसरे विषय में किसान के श्रम का महत्त्व, लागत और आय का असंतुलन, प्राकृतिक जोखिम तथा आवश्यक सुधार प्रस्तुत करेंगे। भाषा औपचारिक और संवेदनशील रहेगी; किसी पीड़ित व्यक्ति को दोषी ठहराने के स्थान पर सहायता और व्यवस्था में सुधार पर बल देंगे।

चरण 2: पहला आदर्श आलेख: युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति

लेखक: एक जागरूक विद्यार्थी

युवा किसी भी देश की ऊर्जा और आशा होते हैं। जब यही ऊर्जा नशे की गिरफ्त में आने लगती है, तब चिंता केवल व्यक्ति की नहीं, पूरे समाज की होती है। नशा क्षणिक आनंद का भ्रम देकर धीरे-धीरे स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और संबंधों को कमजोर करता है।

मित्रों का दबाव, तनाव, अकेलापन और दिखावे की इच्छा कई युवाओं को नशे की ओर धकेलते हैं। कुछ लोग समस्याओं से बचने के लिए इसका सहारा लेते हैं, किंतु इससे समस्याएँ और बढ़ती हैं। पढ़ाई में अरुचि, आर्थिक कठिनाई और परिवार में अविश्वास उसके दुष्परिणाम हैं। व्यसन से जूझ रहे युवक को तिरस्कार नहीं, उपचार और सहयोग चाहिए।

रोकथाम के लिए परिवार में खुला संवाद आवश्यक है। विद्यालयों में परामर्श, खेल और रचनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। नशीले पदार्थों की अवैध बिक्री पर नियंत्रण और आयु संबंधी नियमों का पालन भी जरूरी है।

सही जानकारी, समय पर सहायता और संवेदनशील व्यवहार से युवाओं को स्वस्थ जीवन की ओर लौटाया जा सकता है। नशामुक्त युवा ही सशक्त भविष्य का निर्माण करेंगे।

चरण 3: दूसरा आदर्श आलेख: किसानों की समस्याओं की अनदेखी किसानों की समस्याओं की अनदेखी

लेखक: एक जागरूक विद्यार्थी

हमारी थाली का प्रत्येक अन्नकण किसान के श्रम की कहानी कहता है। फिर भी अन्न उगाने वाले के जीवन की कठिनाइयाँ प्रायः हमारी चर्चा से बाहर रह जाती हैं। किसान की समस्या केवल ग्रामीण समाज की समस्या नहीं; उसका संबंध पूरे देश की खाद्य सुरक्षा से है।

बीज, खाद और सिंचाई की बढ़ती लागत के सामने उपज का उचित मूल्य न मिलना बड़ी चुनौती है। सूखा, बाढ़ और असमय वर्षा मेहनत पर पानी फेर देते हैं। छोटे किसानों के पास भंडारण और परिवहन की सुविधा सीमित होती है, इसलिए वे कभी-कभी विवश होकर सस्ते में उपज बेचते हैं। ऋण का बोझ उनकी चिंता और बढ़ाता है।

इन समस्याओं की अनदेखी कृषि और ग्रामीण जीवन दोनों को कमजोर करती है। समय पर सुलभ ऋण, विश्वसनीय सिंचाई, सरल बीमा सहायता तथा उपज के उचित मूल्य की व्यवस्था आवश्यक है। सहकारी भंडारण और बाजार की पारदर्शी जानकारी किसान की सौदेबाजी की क्षमता बढ़ा सकती है।

किसान को दया का पात्र मानने के बजाय उसके श्रम का सम्मान और अधिकारों की रक्षा करनी होगी। समृद्ध किसान ही सुरक्षित और समृद्ध समाज की बुनियाद है।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों आलेख अपने-अपने विषय की समस्या, उसके कारण और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। परीक्षा में चुने हुए विषय पर इसी क्रम में सुसंगत आलेख लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: आलेख लिखते समय भूमिका के बाद कारण और प्रभाव जोड़ें तथा अंत में ठोस उपाय दें; केवल नारे लिखकर विषय पूरा न मानें।

6. 'मेरे स्कूल का पुस्तकालय' अथवा 'मेरे शहर में प्रदूषण' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी परिचित विषय को दृश्य, अनुभव और मानवीय संवेदना के माध्यम से रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। आकर्षक शीर्षक, जीवंत आरंभ और प्रभावपूर्ण समापन इसकी विशेषताएँ हैं।
- फ़ीचर में कथात्मक वर्णन के साथ विषय से जुड़ी उपयोगी जानकारी भी रहती है। नीचे दोनों विकल्पों के स्वतंत्र आदर्श उत्तर हैं।

चरण 1: दोनों विषयों की सामग्री और शैली पुस्तकालय वाले फ़ीचर में प्रवेश का दृश्य, पुस्तकों और पाठकों का संसार तथा पढ़ने के अनुभव को केंद्र बनाएँगे। प्रदूषण वाले फ़ीचर में सुबह का दृश्य, धुएँ और शोर का प्रभाव तथा सुधार की आशा रखेंगे। समाचार जैसी केवल सूचना देने के बजाय पाठक को दृश्य और अनुभव से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 2: पहला आदर्श फ़ीचर: मेरे स्कूल का पुस्तकालय पन्नों के बीच खुलती दुनिया

लेखक: एक विद्यार्थी

घंटी बजते ही गलियारे में शोर उमड़ता है, लेकिन पुस्तकालय के दरवाजे के भीतर पहुँचते ही जैसे उस शोर की गति धीमी पड़ जाती है। मेज पर खुली पुस्तक और खिड़की से आती रोशनी हमें एक अलग संसार में आमंत्रित करती हैं। यही है मेरे स्कूल का पुस्तकालय।

अलमारियों में रखी कहानियाँ, जीवनियाँ और ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें मानो अपनी बारी की प्रतीक्षा करती हैं। कोई विद्यार्थी शब्दकोश में नया शब्द खोज रहा है, तो कोई चित्रों वाली पुस्तक देखकर मुसकरा रहा है। पुस्तकालयाध्यक्ष हमारी रुचि पूछकर पुस्तक चुनने में सहायता करते हैं। यहाँ प्रश्न पूछना संकोच की बात नहीं, सीखने की शुरुआत है।

पुस्तकालय केवल परीक्षा की तैयारी का स्थान नहीं। यहाँ इतिहास का कोई पात्र मित्र बन जाता है और विज्ञान की कोई खोज आश्चर्य से भर देती है। शांत बैठकर पढ़ना हमें धैर्य और एकाग्रता भी सिखाता है।

जब पुस्तक लौटाने का समय आता है, मन अगली पुस्तक चुनने लगता है। स्कूल का यह छोटा-सा कमरा सचमुच बड़ी दुनिया की खिड़की है; इसके पन्ने खुलते हैं तो हमारी सोच भी खुलती जाती है।

चरण 3: दूसरा आदर्श फ़ीचर: मेरे शहर में प्रदूषण धुएँ की चादर में मेरा शहर

लेखक: एक विद्यार्थी

सुबह की सैर पर निकलिए तो पक्षियों की आवाज से पहले वाहनों के हॉर्न सुनाई देते हैं। सड़क किनारे की पत्तियों पर धूल जमी है और

हवा में धुएँ की गंध है। मेरा शहर जाग रहा है, पर उसकी साँस कुछ भारी लगती है।

चौराहे पर रुकी गाड़ियों से निकलता धुआँ राहगीरों को घेर लेता है। निर्माणस्थलों की उड़ती मिट्टी और खुले में जलता कूड़ा परेशानी बढ़ाते हैं। उधर नाले में बहती गंदगी याद दिलाती है कि प्रदूषण केवल हवा तक सीमित नहीं। लगातार शोर से घरों और विद्यालयों का सुकून भी घटता है।

इस वातावरण का सबसे अधिक असर बच्चों, बुजुर्गों और सड़क पर काम करने वालों पर पड़ता है। जिस शहर को हम घर कहते हैं, उसकी हवा और पानी की देखभाल भी हमारी साझा जिम्मेदारी है। सार्वजनिक परिवहन, ढके हुए निर्माणस्थल, कूड़े का उचित निस्तारण और पेड़ों की रक्षा छोटे किंतु आवश्यक कदम हैं।

मैं उस सुबह की कल्पना करता हूँ जब खिड़की खोलने पर धुआँ नहीं, ताजी हवा मिले। यह कल्पना तभी सच होगी जब नागरिक और प्रशासन मिलकर शहर की साँसों को स्वच्छ बनाएँगे।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों फ़ीचर दृश्यात्मक शुरुआत, मानवीय अनुभव और सार्थक समापन के द्वारा विषय को पाठक के निकट लाते हैं।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत किसी दिखने-सुनने वाले दृश्य से करें; बीच में अनुभव और सूचना जोड़ें और अंत में उसी केंद्रीय भाव पर लौटें।

7(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: छोटा मेरा खेत चौकोना काग़ज़ का एक पत्रा, कोई अंधड़ कहीं से आया क्षण का बीज वहाँ बोया गया। कल्पना के रसायनों को पी बीज गल गया निःशेष; शब्द के अंकुर फूटे, पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष! खेत की तुलना काग़ज़ के पत्रे से क्यों की गई है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने खेती की प्रक्रिया के माध्यम से कविता की रचना-प्रक्रिया स्पष्ट की है। काग़ज़ का चौकोर पन्ना खेत और भाव का क्षण बीज बनता है।
- रूपक में दो भिन्न वस्तुओं की कार्यगत समानता महत्त्वपूर्ण है: खेत फसल को और काग़ज़ रचना को विकसित होने का आधार देता है।

चरण 1: खेत और काग़ज़ की समानता खेत की तुलना काग़ज़ के पत्रे से इसलिए की गई है कि दोनों सृजन के आधार हैं। किसान खेत में बीज बोकर फसल उगाता है, जबकि कवि काग़ज़ पर अपने मन में उत्पन्न भाव और विचारों को शब्दों में व्यक्त करता है। पन्ने का चौकोर आकार भी खेत की छवि को साकार करता है; किंतु तुलना का मुख्य आधार केवल आकार नहीं, सृजन की समान प्रक्रिया है।

चरण 2: काव्यांश से तुलना स्पष्ट करना काव्यांश में क्षण का बीज बोया जाता है और वह कल्पना के रसायनों से पोषण पाता है। फिर शब्दों के अंकुर फूटते हैं और पल्लव-पुष्प विकसित होते हैं। ये बिंब बताते हैं कि अनुभूति कल्पना के सहारे कविता का रूप लेती है। जिस प्रकार भूमि में बीज से पौधा विकसित होता है, उसी प्रकार काग़ज़ पर भाव से शब्दों की रचना विकसित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष काग़ज़ कवि की सृजनभूमि है, जहाँ अनुभूति का बीज कल्पना के पोषण से शब्दों की फसल बनता है; इसलिए उसकी तुलना खेत से की गई है।

त्वरित सुझाव: तुलना बताते समय केवल चौकोर आकार न लिखें; खेत में बीज से फसल और काग़ज़ पर भाव से कविता बनने का संबंध अवश्य जोड़ें।

7(ख). खेत अगर काग़ज़ है तो बीज क्या है? आप ऐसा क्यों मानते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने काव्य-रचना की तुलना खेती से की है। काग़ज़ खेत है और मन में उत्पन्न भाव या विचार उसका बीज है।

- कविता का आरंभ किसी अनुभूति से होता है; कल्पना उसे शब्दों और अर्थों में विकसित करती है।

चरण 1: बीज का प्रतीकात्मक अर्थ खेत यदि काग़ज़ है, तो उसमें बोया गया बीज कवि के हृदय में जन्मा भाव या विचार है। किसी घटना, अनुभव या संवेदना से यह भाव जागता है और कविता की रचना का आरंभ करता है। कविता में बीज के गल जाने का उल्लेख इसी मूल भाव के रचना में समा जाने की ओर संकेत करता है।

चरण 2: भाव को बीज मानने का कारण जिस प्रकार बीज से अंकुर फूटकर पौधा विकसित होता है, उसी प्रकार मूल भाव से शब्द अंकुरित होते हैं और कल्पना के सहारे कविता रूप ग्रहण करती है। बीज के बिना खेती और भाव के बिना सार्थक काव्य संभव नहीं। इसलिए काग़ज़ पर दिखाई देने वाले अक्षरों के पीछे छिपा रचनात्मक भाव ही वास्तविक बीज है।

चरण 3: निष्कर्ष काग़ज़ रूपी खेत का बीज कवि के मन का भाव या विचार है, क्योंकि उसी से शब्दों और कल्पना के माध्यम से कविता विकसित होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खेत, बीज और अंकुर के साथ क्रमशः काग़ज़, भाव और शब्द का संबंध स्पष्ट कीजिए।

7(ग). काव्य-पंक्तियों के आधार पर किसी कवि की रचना-प्रक्रिया को क्रम से समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेती का रूपक रचना के जन्म, विकास और उसके आनंद को स्पष्ट करता है।
- अनुभूति, भाव, कल्पना और शब्द मिलकर पाठक के लिए रसपूर्ण रचना बनाते हैं।

चरण 1: अनुभूति से भाव का जन्म सबसे पहले कोई अनुभव या विचारों का अंधड़ कवि के मन को उद्वेलित करता है। उससे उसके भीतर भाव का बीज पड़ता है। कवि उस भाव को कल्पना के सहारे आत्मसात करता है; बीज का गलना मूल भाव के नए रचनात्मक रूप में बदलने का संकेत है। यह रचना के आरंभ की आंतरिक तैयारी है।

चरण 2: शब्दों से रसपूर्ण रचना तक इसके बाद शब्दों के अंकुर फूटते हैं और कल्पना के साथ पल्लव तथा पुष्प बनकर कविता का रूप विकसित करते हैं। भाव और अभिव्यक्ति के परिपक्व होने पर रचना रसपूर्ण फल देती है। पाठक इस रस का बार-बार आस्वाद लेते हैं, फिर भी उसका आनंद समाप्त नहीं होता। इस तरह छोटी-सी अनुभूति स्थायी साहित्यिक आनंद का आधार बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष रचना का क्रम है: अनुभव या वैचारिक हलचल, भाव-बीज, कल्पना द्वारा रूपांतरण, शब्दों का विकास और अंततः पाठकों को मिलने वाला अक्षय काव्य-रस।

त्वरित सुझाव: प्रक्रिया लिखते समय बीज से अंकुर, पल्लव-पुष्प और फल तक की क्रमिक काव्य-छवियों का अनुसरण कीजिए।

7(घ). रचना में विचारों के अंधड़ की क्या भूमिका है? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अंधड़ कवि के भीतर उठने वाली तीव्र वैचारिक और भावात्मक हलचल का रूपक है।
- रचना के लिए बाहरी अनुभव मन में संवेदना और अभिव्यक्ति की प्रेरणा जगाते हैं।

चरण 1: रचनात्मक हलचल का उदय विचारों का अंधड़ कवि के शांत मन को झकझोरता है और उसमें नई अनुभूति जगाता है। जैसे आँधी कहीं से कोई बीज लाकर खेत में डाल सकती है, वैसे ही जीवन की घटनाएँ, अनुभव और विचार कवि के मन में भाव का बीज डालते हैं। इस प्रकार अंधड़ कविता की रचना के लिए प्रारंभिक प्रेरणा बनता है।

चरण 2: भाव को अभिव्यक्ति की दिशा इस हलचल से उत्पन्न भाव कल्पना का सहारा पाकर शब्दों में ढलता है और आगे चलकर

कविता बन जाता है। यहाँ अंधड़ को केवल विनाशकारी प्राकृतिक घटना समझना उचित नहीं; वह सृजन की शुरुआत कराने वाली शक्ति है। कवि इस वैचारिक उद्वेलन को ग्रहण करके उसे ऐसी रचना में बदलता है जिसका रस पाठक बार-बार ले सकें।

चरण 3: निष्कर्ष विचारों का अंधड़ कवि के मन में भाव का बीज बोता है और उसे कल्पना तथा शब्दों द्वारा कविता रचने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: अंधड़ का अर्थ बताते हुए उसकी वैचारिक हलचल और भाव-बीज उत्पन्न करने वाली भूमिका अवश्य जोड़िए।

अथवा

7(क). बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥ अब अवलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥ निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा॥ सौंपेसि मोहि तुम्हहिं गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी॥ उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥ 'उठि किन मोहि सिखावहु भाई' — कौन किसे कह रहा है? काव्यांश का संदर्भ क्या है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास के रामचरितमानस के लंकाकांड में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने के प्रसंग से हैं।
- करुण रस के इस प्रसंग में राम का मानवीय दुःख और भ्रातृप्रेम सामने आता है।

चरण 1: वक्ता और संबोधित व्यक्ति उठकर शिक्षा देने का आग्रह राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कर रहे हैं। लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े हैं और राम अत्यंत व्याकुल होकर उनसे बोल रहे हैं। वे चाहते हैं कि लक्ष्मण उठकर बताएँ कि इस दशा में उन्हें क्या करना चाहिए तथा माता सुमित्रा को वे क्या उत्तर देंगे।

चरण 2: काव्यांश का प्रसंग लंका के युद्ध में मेघनाद के शक्तिबाण से लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते हैं। उनकी दशा देखकर राम शोकाकुल होकर विलाप करते हैं। उन्हें याद आता है कि सुमित्रा ने अपने पुत्र को उन पर विश्वास करके उनके हाथ सौंपा था। अब वे उस विश्वास और उत्तरदायित्व को स्मरण करके व्यथित हैं। यही असहाय मनःस्थिति भाई को उठने की पुकार में प्रकट हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष यह राम की मूर्च्छित लक्ष्मण से की गई करुण पुकार है। प्रसंग लंका-युद्ध में मेघनाद के शक्तिबाण से लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम के विलाप का है।

त्वरित सुझाव: संदर्भ के उत्तर में वक्ता, श्रोता, मूर्च्छा का कारण और राम की तत्कालीन मनःस्थिति स्पष्ट कीजिए।

7(ख). पंक्तियों के आधार पर भाई के प्रति राम के प्रेम पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में राम का लक्ष्मण के प्रति अगाध स्नेह, उत्तरदायित्व और वियोग की आशंका व्यक्त हुई है।
- राम का करुण विलाप उन्हें संवेदनशील बड़े भाई के रूप में प्रस्तुत करता है।

चरण 1: भाई के वियोग की असहनीय पीड़ा राम लक्ष्मण की मूर्च्छा देखकर इतने व्याकुल हैं कि संसार का अपयश सह लेना भी उन्हें इस संकट की तुलना में स्वीकार्य लगता है। पत्नी की हानि से भी बढ़कर वे इस समय भाई की संभावित हानि से विचलित हैं। इस कथन का संदर्भ शोक की तीव्रता है; इससे लक्ष्मण के प्रति उनके गहरे और आत्मीय प्रेम का पता चलता है।

चरण 2: स्नेह के साथ उत्तरदायित्व राम को सुमित्रा का विश्वास याद आता है, जिन्होंने लक्ष्मण को उनके संरक्षण में सौंपा था। वे सोचते हैं कि माता को क्या उत्तर देंगे और मूर्च्छित भाई से ही उठकर राह बताने की प्रार्थना करते हैं। यह पुकार उनकी असहायता और भाई पर

भावनात्मक निर्भरता प्रकट करती है। वे लक्ष्मण को केवल सहयोगी नहीं, अपना अत्यंत प्रिय स्वजन मानते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम का प्रेम अत्यंत गहरा, करुण और उत्तरदायित्वपूर्ण है; लक्ष्मण की दशा उन्हें असहाय कर देती है और सुमित्रा के विश्वास की चिंता उनके दुःख को और बढ़ाती है।

त्वरित सुझाव: भ्रातृप्रेम की टिप्पणी में अपयश सहने की बात, माता का विश्वास और भाई को उठने की पुकार जोड़िए।

7(ग). 'उतरु काह दैहउँ तेहि जाई।' 'तेहि' किसे कहा गया है? उसके समक्ष जाने में राम को क्या संकोच है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम का अर्थ काव्यांश में उससे पहले आए व्यक्ति और प्रसंग से निश्चित होता है।
- राम का संकोच सुमित्रा के विश्वास तथा लक्ष्मण की रक्षा के अपने दायित्व से जुड़ा है।

चरण 1: तेहि का अभिप्राय यहाँ तेहि शब्द लक्ष्मण की माता सुमित्रा के लिए आया है। इससे पहले राम उसी जननी का उल्लेख करते हैं जिसके प्राणों के आधार लक्ष्मण हैं। सुमित्रा ने राम को परम हितकारी और सुख देने वाला मानकर अपने पुत्र को उनके हाथ सौंपा था। इसलिए प्रश्न में आया सर्वनाम उसी माता की ओर संकेत करता है।

चरण 2: माता के सामने जाने का संकोच लक्ष्मण की मूर्च्छित अवस्था देखकर राम को आशंका है कि यदि उन्हें कुछ हो गया तो वे सुमित्रा से क्या कहेंगे। वे स्वयं को उस पुत्र की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी मानते हैं जिसे माता ने विश्वासपूर्वक उनके साथ भेजा था। इसी विश्वास का उत्तर न दे पाने और माता के शोक का सामना करने की पीड़ा उन्हें संकोच से भर देती है। इसलिए वे लक्ष्मण से उठकर उन्हें उत्तर सिखाने की करुण विनती करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष तेहि से आशय माता सुमित्रा है। उनके सौंपे हुए पुत्र की रक्षा न कर पाने की आशंका और उनके शोक का उत्तर न दे सकने के कारण राम उनके सामने जाने में संकोच करते हैं।

त्वरित सुझाव: सर्वनाम का संकेत सुमित्रा से जोड़कर उनके विश्वास और राम के रक्षण-दायित्व से संकोच का कारण समझाइए।

7(घ). इन पंक्तियों में नारी के बारे में तुलसी की जो मान्यता उजागर हुई है, उस पर अपने विचार लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में राम का कथन भाई के अनुपम स्नेह और तत्कालीन सामाजिक मान्यता, दोनों को व्यक्त करता है।
- कवि की सामाजिक मान्यता पर विचार करते समय प्रसंगगत शोक और स्त्री की स्वतंत्र गरिमा का अंतर समझना आवश्यक है।

चरण 1: उजागर मान्यता राम कहते हैं कि स्त्री के लिए प्रिय भाई को खोना अत्यंत दुखद है। नारी की हानि को भाई की हानि के समान अपूरणीय न मानने से ऐसी पुरुषप्रधान मान्यता सामने आती है जिसमें पत्नी का स्थान अपेक्षाकृत गौण तथा उसका विकल्प संभव समझा गया है। दूसरी ओर सहोदर भाई को दुर्लभ और उसका स्नेह अतुलनीय बताया गया है। यह कथन लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम के विलाप के प्रसंग में आया है।

चरण 2: अपना विचार भाई के प्रति राम का गहरा प्रेम स्वाभाविक और मार्मिक है, पर उसके आधार पर नारी का महत्त्व कम आँकना उचित नहीं है। स्त्री भी संवेदना, व्यक्तित्व और आत्मसम्मान वाली स्वतंत्र मनुष्य है। पत्नी और भाई के संबंध भिन्न होते हैं; उनके महत्त्व की तुलना करके किसी एक को तुच्छ नहीं ठहराना चाहिए। आज समानता के दृष्टिकोण से स्त्री की गरिमा और उसके प्रेम का भी उतना ही सम्मान आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में नारी को गौण मानने वाली तत्कालीन दृष्टि दिखती है। भाई के प्रेम की सराहना करते हुए भी स्त्री को

कम महत्त्व देने की मान्यता से सहमत नहीं हुआ जा सकता।

त्वरित सुझाव: पहले पंक्तियों से उभरती मान्यता बताइए, फिर समानता और मानवीय गरिमा के आधार पर अपना संतुलित मत दीजिए।

8(क). निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ, जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते — मैं अपने मन का गान किया करता हूँ। रूपक अलंकार का एक उदाहरण चुनकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय और उपमान का भेद मिटाकर एक को दूसरा मान लिया जाता है।
- काव्य-सौंदर्य बताते समय अलंकार की पहचान के साथ उससे व्यक्त भाव भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: उदाहरण और पहचान काव्यांश में 'स्नेह-सुरा' रूपक अलंकार का उदाहरण है। यहाँ स्नेह उपमेय और सुरा उपमान है। कवि ने स्नेह को सुरा के समान कहने के बजाय स्नेह पर सीधे सुरा का आरोप किया है। इस प्रकार प्रेम और मदिरा का अभेद स्थापित हुआ है। समानता बताने वाला 'जैसा' या 'समान' शब्द यहाँ प्रयुक्त नहीं है।

चरण 2: भाव और सौंदर्य मदिरा पीने वाला जिस प्रकार मस्ती में डूब जाता है, उसी प्रकार कवि प्रेम के आनंद में तल्लीन रहता है। यह प्रेम उसे आत्मसंतोष और अपनी अनुभूतियों को गाने की स्वतंत्रता देता है। इसलिए वह संसार की प्रशंसा पाने के लिए संसार की पसंद का गान नहीं करता। 'स्नेह-सुरा' के छोटे, सजीव बिंब में कवि की प्रेमपूर्ण मस्ती और लोकमत से निर्लिप्तता प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष 'स्नेह-सुरा' में स्नेह पर सुरा का आरोप होने से रूपक अलंकार है। यह प्रयोग प्रेम की मादकता और कवि की आत्ममग्न मस्ती को मूर्त करता है।

त्वरित सुझाव: रूपक के उत्तर में उपमेय, उपमान और आरोप तीनों पहचानकर उस बिंब का भावात्मक प्रभाव लिखिए।

8(ख). काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की टिप्पणी में बोली, शब्दावली, सहजता और अभिव्यक्ति की लय का उल्लेख किया जाता है।
- भाषागत विशेषता को काव्यांश के किसी वास्तविक प्रयोग से जोड़ना उत्तर को स्पष्ट बनाता है।

चरण 1: शब्दावली और अभिव्यक्ति काव्यांश की भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हिंदी है। 'स्नेह', 'सुरा', 'पान', 'ध्यान' और 'गान' जैसे संस्कृतनिष्ठ शब्दों के साथ 'मैं', 'जग' और 'मन' जैसे प्रचलित शब्द आए हैं। इस मेल से भाषा साहित्यिक होते हुए भी आत्मीय और बोधगम्य बनी है। कवि अपने मन की बात सीधे कहता है; शब्दावली अनावश्यक जटिलता पैदा नहीं करती।

चरण 2: लय और व्यंजना 'किया करता हूँ' की आवृत्ति तथा पान, ध्यान और गान का ध्वनिसाम्य पंक्तियों में गीतात्मक लय उत्पन्न करते हैं। 'स्नेह-सुरा' का रूपक प्रेम की मस्ती को व्यंजित करता है। 'जग' और 'मन' के प्रयोग संसार की अपेक्षाओं तथा कवि की निजी अनुभूतियों के अंतर को उभारते हैं। प्रथम पुरुष की शैली कवि के आत्मस्वीकार और स्वतंत्र व्यक्तित्व को निकटता से सामने लाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इसकी खड़ी बोली हिंदी सरल, आत्मीय, लयात्मक और भावानुकूल है। रूपक, आवृत्ति और ध्वनिसाम्य ने अभिव्यक्ति को संगीतमय तथा प्रभावशाली बनाया है।

त्वरित सुझाव: भाषा पर लिखते हुए केवल सरलता न बताइए; शब्दावली और लय के लिए काव्यांश से उदाहरण भी चुनिए।

8(ग). अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एक ही व्यंजन की कलात्मक आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार बनता है।
- उदाहरण के साथ आवृत्त होने वाला व्यंजन लिखने से अलंकार की पहचान स्पष्ट होती है।

चरण 1: पहला उदाहरण 'मैं अपने मन का गान किया करता हूँ' में 'मैं' और 'मन' में म व्यंजन की आवृत्ति है। इस ध्वनि की पुनरावृत्ति कवि की आत्मपरक अनुभूति को व्यक्त करने वाली पंक्ति को मधुर बनाती है। यहाँ अनुप्रास का आधार शब्दों का अर्थ या उनका एक जैसा होना नहीं, बल्कि म व्यंजन का बार-बार सुनाई देना है। इसलिए उद्धरण के साथ म ध्वनि की पहचान आवश्यक है।

चरण 2: दूसरा उदाहरण 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते' में 'जग', 'जो' और पुन: 'जग' में ज व्यंजन की आवृत्ति हुई है। इस कारण यहाँ भी अनुप्रास अलंकार है। ध्वनि की यह आवृत्ति संसार और संसार का गान करने वालों की ओर ध्यान खींचती है। दोनों उदाहरण प्रस्तुत काव्यांश से ही लिए गए हैं; पहले में म और दूसरे में ज की आवृत्ति अलंकार का स्पष्ट आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष दो उदाहरण हैं: 'मैं अपने मन' में म की आवृत्ति और 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते' में ज की आवृत्ति। दोनों में अनुप्रास अलंकार है।

त्वरित सुझाव: दो अलग उदाहरण देते समय प्रत्येक के आगे उसका आवृत्त व्यंजन अवश्य लिखिए; केवल पंक्ति उद्धृत करना पर्याप्त नहीं है।

अथवा

8(क). अथवा: नहला के छलके-छलके निर्मल जल से, उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को जब घुटनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े। काव्यांश की रचना किस छंद में हुई है? उस छंद की क्या विशेषता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रुबाई उर्दू-फारसी काव्यपरंपरा का चार पंक्तियों वाला स्वतंत्र छंद है।
- छंद की पहचान में पंक्तियों की संख्या, तुक-योजना और भाव की पूर्णता मुख्य विशेषताएँ हैं।

चरण 1: छंद की पहचान प्रस्तुत काव्यांश की रचना रुबाई छंद में हुई है। फिराक की इस रुबाई में माँ बच्चे को नहलाकर उसके बाल सँवारती और कपड़े पहनाती है। बच्चे की स्नेहपूर्ण दृष्टि और माँ की ममता का छोटा-सा घरेलू दृश्य चार पंक्तियों में पूर्ण हो जाता है। इसलिए इसे किसी लंबी कथा का वर्णन मानने के बजाय स्वतंत्र भावचित्र के रूप में समझना चाहिए।

चरण 2: रुबाई की विशेषताएँ रुबाई में चार पंक्तियाँ होती हैं। सामान्यत: पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियाँ तुकांत होती हैं तथा तीसरी स्वतंत्र होती है; इसकी तुक-योजना क-क-ख-क है। इस काव्यांश में 'से', 'करके' और 'कपड़े' के पंक्ति-अंत तुक-संबंध बनाते हैं, जबकि तीसरी पंक्ति 'को' पर समाप्त होती है। इसकी निर्धारित छंदगत लय होती है। संक्षिप्त आकार में एक विचार या भाव की पूर्ण और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति इसकी प्रमुख विशेषता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश रुबाई छंद में है। चार पंक्तियाँ, पहली-दूसरी-चौथी का तुकांत होना तथा एक भाव की संक्षिप्त और पूर्ण अभिव्यक्ति इसकी विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: रुबाई याद रखने के लिए चार पंक्तियों और क-क-ख-क तुक-योजना को साथ जोड़िए तथा इसी अंश के पंक्ति-अंत देखिए।

8(ख). काव्यांश से हिन्दी, उर्दू और लोकभाषा के उदाहरण छाँटकर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की शब्दावली में हिंदी, उर्दू और लोकप्रयोग का सहज मेल मातृस्नेह के दृश्य को आत्मीय बनाता है।
- शब्द छाँटते समय केवल प्रस्तुत काव्यांश के शब्द लेने चाहिए; बाहर से उदाहरण नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: हिंदी और उर्दू के उदाहरण हिंदी के उदाहरण 'निर्मल', 'जल', 'बच्चा', 'मुँह' और 'कपड़े' हैं। ये शब्द स्नान करते और कपड़े पहनते बच्चे के सहज घरेलू दृश्य को व्यक्त करते हैं। उर्दू का उदाहरण 'गेसुओं' है, जिसका अर्थ बालों या केशों से है। 'गेसुओं' के प्रयोग से माँ द्वारा बच्चे के उलझे बाल सँवारने का चित्र कोमल और आकर्षक बनता है।

चरण 2: लोकभाषा के उदाहरण लोकभाषा के उदाहरण 'घुटनियों', 'लेके' और 'पिन्हाती' हैं। इनमें 'लेके' का मानक रूप लेकर और 'पिन्हाती' का अर्थ पहनाती है। ये बोलचाल के रूप माँ और बच्चे के निकट संबंध तथा घर के आत्मीय वातावरण को उभारते हैं। 'घुटनियों में लेके' बच्चे को घुटनों के बीच लेकर कपड़े पहनाने की क्रिया का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। इस प्रकार विविध स्रोतों के शब्द कविता में स्वाभाविक रूप से घुल-मिल गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी: निर्मल, जल, बच्चा; उर्दू: गेसुओं; लोकभाषा: घुटनियों, लेके, पिन्हाती। इनका मेल मातृत्व के दृश्य को सहज और आत्मीय बनाता है।

त्वरित सुझाव: शब्दों को भाषा के अनुसार अलग लिखिए और लोकभाषा के रूपों को उद्धृत करते समय उनके मूल वर्तनी-रूप बनाए रखिए।

8(ग). भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को जब घुटनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इन पंक्तियों में माँ और शिशु के सहज संबंध के माध्यम से वात्सल्य रस व्यक्त हुआ है।
- भाव-सौंदर्य समझाते समय दृश्य, बच्चे की प्रतिक्रिया और उनमें निहित ममता का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: घरेलू दृश्य का अर्थ माँ नहलाने के बाद बच्चे को अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहना रही है। यह सामान्य घरेलू क्रिया भी उसके स्नेह और देखभाल के कारण अत्यंत आत्मीय बन गई है। बच्चे को घुटनों के बीच सँभालने में उसकी कोमलता और सुरक्षा की भावना दिखाई देती है। कवि ने किसी असाधारण घटना के स्थान पर रोजमर्रा के जीवन से ममता का सुंदर चित्र चुना है।

चरण 2: बच्चे की दृष्टि में व्यक्त प्रेम कपड़े पहनते समय बच्चा बड़े प्यार से माँ के मुँह की ओर देखता है। उसकी निश्छल दृष्टि में माँ के प्रति लगाव, विश्वास और अपनेपन का भाव है। माँ का स्नेह केवल एकतरफा नहीं है; बच्चे की प्रेमपूर्ण निगाह उसका सहज उत्तर देती है। इस प्रकार माँ की सेवा और बच्चे की भोली प्रतिक्रिया मिलकर वात्सल्य को सजीव बनाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का भाव-सौंदर्य माँ की ममता और बच्चे के निष्कपट प्रेम के पारस्परिक, सहज तथा आत्मीय चित्रण में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में केवल घटना न दोहराएँ; माँ की क्रिया और बच्चे की प्रेमपूर्ण दृष्टि से उभरता वात्सल्य स्पष्ट करें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: "'कैमरे में बंद अपाहिज़' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता टेलीविजन पर करुणा के प्रदर्शन के पीछे छिपी संवेदनहीनता का व्यंग्यपूर्ण उद्घाटन करती है।
- समीक्षा में कार्यक्रम के घोषित उद्देश्य और साक्षात्कारकर्ता के व्यवहार के अंतर को कविता के प्रसंग से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: करुणा के घोषित उद्देश्य की पहचान कार्यक्रम बनाने वाले स्वयं को सामाजिक उद्देश्य से जुड़ा बताते हैं और अपाहिज व्यक्ति का दुख दर्शकों तक पहुँचाने का दावा करते हैं। इस बाहरी रूप से लगता है कि वे पीड़ित की स्थिति समझना और उसके प्रति सहानुभूति जगाना चाहते हैं। लेकिन साक्षात्कार में व्यक्ति की गरिमा और उसकी सहज अभिव्यक्ति को महत्त्व नहीं मिलता; उसकी पीड़ा को कैमरे के लिए उपयोगी दृश्य समझा जाता है।

चरण 2: प्रश्नों और कैमरे में निहित क्रूरता साक्षात्कारकर्ता बार-बार ऐसे प्रश्न करता है जिनसे अपाहिज व्यक्ति अपने दुख को स्वीकार करे और भावुक हो उठे। वह उसके रोने और चेहरे पर पीड़ा उभरने की प्रतीक्षा करता है। कैमरा उसकी आँखों तथा शारीरिक असमर्थता को प्रमुखता देता है। इस दबाव में सामने वाला मनुष्य संवाद का बराबर का सहभागी नहीं रह जाता, बल्कि प्रदर्शन की वस्तु बन जाता है। उसकी सहायता के बजाय उसके दुख का नाटकीय उपयोग ही लक्ष्य दिखाई देता है।

चरण 3: व्यंग्य का निष्कर्ष स्पष्ट करना कार्यक्रम की सफलता इस बात से जुड़ जाती है कि पीड़ित और दर्शक एक साथ रो पड़ें। दर्शकों की भावुक प्रतिक्रिया प्राप्त करके कार्यक्रम समाप्त किया जा सकता है, पर पीड़ित की वास्तविक समस्या बनी रहती है। इसीलिए कविता की आलोचना अपाहिज व्यक्ति की नहीं, उसके दुख को लोकप्रिय कार्यक्रम में बदलने वाली दृष्टि की है। करुणा की भाषा और अमानवीय व्यवहार का यही विरोध कविता के व्यंग्य को तीखा बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन उचित है: कविता में करुणा का मुखौटा पहनकर पीड़ित की असहायता का प्रदर्शन और उसकी भावनाओं का शोषण किया जाता है; यही छिपी हुई क्रूरता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सामाजिक उद्देश्य के दावे की तुलना रुलाने वाले प्रश्नों, कैमरे के दबाव और पीड़ित की उपेक्षा से करें।

9(ख). सिद्ध कीजिए कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्र है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह ने उषाकाल के बदलते रंगों को घरेलू और ग्रामीण जीवन के परिचित उपमानों से मूर्त किया है।
- गतिशीलता का अर्थ यहाँ एक ही स्थिर दृश्य का वर्णन नहीं, प्रकाश बढ़ने के साथ आकाश का लगातार रूप बदलना है।

चरण 1: ग्रामीण परिवेश के उपमान कविता में सुबह के आकाश को नीले शंख से जोड़ा गया है। फिर वह राख से लीपे हुए गीले चौके की तरह दिखाई देता है। चौका और उसकी लिपाई ग्रामीण घरेलू जीवन की परिचित गतिविधियाँ हैं। इसके बाद काली सिल पर थोड़ा लाल केसर घुल जाने का बिंब आता है। चौके, सिल और केसर जैसे ठोस उपमान प्रकृति को गाँव के जीवन के निकट लाते हैं और आकाश के रंगों को आँखों के सामने उपस्थित करते हैं।

चरण 2: बदलते रंगों में गतिशीलता आरंभिक नीलेपन और गीली राख जैसे धूसर रंग के बाद क्षितिज की लालिमा उभरती है। स्लेट पर लाल खड़िया मल देने जैसा बिंब इसी रंग-परिवर्तन को आगे बढ़ाता है। इन चित्रों को क्रम में रखने से अनुभव होता है कि रात का अंधकार धीरे-धीरे हट रहा है और सुबह का उजाला फैल रहा है। प्रत्येक उपमान पिछले चित्र को बदलता और नया दृश्य रचता है; इसीलिए यह चित्र स्थिर नहीं रहता।

चरण 3: सूर्योदय से दृश्य का पूर्ण होना नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब प्रकाश की चमक और स्पंदन को अनुभव कराता है। अंत में सूर्योदय होते ही उषा का जादू टूट जाता है। इससे समय के आगे बढ़ने का स्पष्ट संकेत मिलता है। ग्रामीण घर-आँगन से लिए गए बिंब और अँधेरे से उजाले की यात्रा मिलकर गाँव की सुबह को जीवंत बनाते हैं। कविता का प्रभाव रंगों की इसी क्रमिक गति से उत्पन्न

होता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार ग्रामीण घरेलू उपमानों तथा नीले, धूसर और लाल रंगों से सूर्योदय तक होते परिवर्तन के कारण 'उषा' गाँव की सुबह का गतिशील चित्र बन जाती है।

त्वरित सुझाव: चौका और सिल से ग्रामीणता सिद्ध करें; बदलते रंगों और अंतिम सूर्योदय से गतिशीलता का प्रमाण दें।

9(ग). भाव स्पष्ट कीजिए — 'विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।' [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल का गर्जन क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है।
- छोटे पौधों और विशाल वृक्षों का विरोध साधारण वंचित जन तथा प्रभुत्वशाली वर्ग के भिन्न अनुभवों को व्यक्त करता है।

चरण 1: विप्लव रव और छोटे का अर्थ 'विप्लव रव' का अर्थ क्रांति की गूँज अथवा परिवर्तन का प्रचंड स्वर है। कविता में बादलों की गर्जना इसी स्वर का प्रतीक बनती है। 'छोटे' का प्रत्यक्ष संकेत छोटे पौधों की ओर है, पर इसके सामाजिक अर्थ में साधारण, गरीब और शोषित मनुष्य भी आते हैं। वे वर्तमान व्यवस्था में दबे रहते हैं और परिवर्तन से नई आशा पाते हैं। अतः पंक्ति का अर्थ केवल प्राकृतिक दृश्य तक सीमित नहीं है।

चरण 2: प्रकृति के बिंब से भाव समझना आँधी और गर्जन से बड़े वृक्षों के गिरने का भय उत्पन्न होता है, जबकि छोटे पौधे वर्षा से जीवन और हरियाली पाते हैं। बादल का आगमन उनके लिए विनाश की अपेक्षा विकास का अवसर है। वे लहलहाते और हँसते हुए प्रतीत होते हैं। छोटे पौधों के इस उल्लास के माध्यम से कवि बताता है कि प्रबल परिवर्तन से उन्हीं को लाभ मिलता है जिन्हें अब तक उचित पोषण और अवसर नहीं मिले।

चरण 3: सामाजिक आशय स्पष्ट करना सामाजिक स्तर पर क्रांति शोषण पर आधारित सत्ता और संपत्ति के दंभ को चुनौती देती है। इससे विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग भयभीत होता है, पर वंचितों को स्वतंत्रता, अधिकार और सम्मान मिलने की संभावना बनती है। इसलिए विप्लव का स्वर उनके सौंदर्य और सामर्थ्य को उभारता है। 'शोभा पाते' का आशय बाहरी सजावट नहीं, बल्कि जीवन में नई स्फूर्ति, आत्मविश्वास और उन्नति का आना है। कविता इसी जनपक्षीय परिवर्तन का स्वागत करती है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति का भाव है कि क्रांति का स्वर छोटे, उपेक्षित और शोषित जन के लिए आशा तथा विकास लाता है; उसी से उनका जीवन खिलता और गरिमा प्राप्त करता है।

त्वरित सुझाव: 'छोटे' के दोनों स्तर बताएँ: वर्षा से खिलते छोटे पौधे और क्रांति से अधिकार पाने वाले शोषित जन।

10(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेज़िंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति — शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाज़ार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। लेखक और पाठ के नाम का उल्लेख करते हुए बताइए कि गद्यांश में किस समस्या की चर्चा है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के लेखक जैनेंद्र कुमार हैं और पाठ का नाम 'बाज़ार दर्शन' है।
- प्रसंग-बोध में समस्या का उत्तर गद्यांश के केंद्रीय विरोध से मिलता है: आवश्यकता की स्पष्टता और क्रयशक्ति का अहंकार।

चरण 1: लेखक और पाठ का परिचय प्रस्तुत गद्यांश जैनेंद्र कुमार के निबंध 'बाज़ार दर्शन' से लिया गया है। लेखक बाजार और उपभोक्ता

के संबंध पर विचार करते हुए बताते हैं कि बाजार की उपयोगिता मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में है। इस उपयोगिता को वही व्यक्ति बनाए रख सकता है जो अपनी जरूरत पहचानता है और खरीदारी के समय विवेक से काम लेता है।

चरण 2: गद्यांश में उठाई गई समस्या यहाँ आवश्यकता जाने बिना केवल पैसे और खरीदने की क्षमता के घमंड में खरीदारी करने की समस्या की चर्चा है। ऐसा उपभोक्ता बाजार के आकर्षण में पड़कर अनावश्यक वस्तुएँ लेता है और अपने धन से प्रतिस्पर्धा, दिखावे तथा लोभ को बढ़ावा देता है। वह स्वयं सार्थक लाभ नहीं पाता और बाजार को भी स्वस्थ उपयोगिता नहीं देता। लेखक इसी स्थिति को बाजार का 'बाज़ारूपन' बढ़ना कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक जैनेंद्र कुमार और पाठ 'बाज़ार दर्शन' है। गद्यांश में क्रयशक्ति के अहंकार से पैदा हुई विवेकहीन खरीदारी तथा उससे बढ़ते बाजारूपन की समस्या उठाई गई है।

त्वरित सुझाव: पहले लेखक और पाठ का नाम दें; फिर 'क्या चाहता है' और 'पर्चेज़िंग पावर के गर्व' के विरोध से समस्या बताएँ।

10(ख). बाज़ार को सार्थकता कौन दे सकते हैं और कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आवश्यकता और विवेक के आधार पर खरीदारी करने वाला व्यक्ति बाज़ार को उपयोगी बनाता है।

चरण 1: सार्थकता देने वाले व्यक्ति को पहचानें बाज़ार को सार्थकता वही व्यक्ति दे सकते हैं जो स्पष्ट रूप से जानते हैं कि उन्हें क्या चाहिए। उनकी इच्छाएँ अनियंत्रित नहीं होतीं; इसलिए वे आकर्षक वस्तुओं को देखकर अपनी वास्तविक आवश्यकता नहीं भूलते। वे बाज़ार में वस्तुओं का चुनाव अपनी जरूरत के अनुसार करते हैं।

चरण 2: सार्थकता देने का तरीका समझें ऐसे लोग केवल अपनी आवश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं और अनावश्यक खरीद से बचते हैं। इससे बाज़ार मनुष्य की जरूरत पूरी करने का साधन बनता है तथा क्रय-विक्रय में उपयोगिता बनी रहती है। इसके विपरीत केवल धन के बल पर खरीदने वाले बाजार में दिखावा और लोभ बढ़ाते हैं। इस दृष्टि में खरीदारी का आधार मन की स्थिरता है। जरूरत स्पष्ट होने पर ग्राहक आकर्षण के वशीभूत नहीं होता और उपलब्ध धन का उचित उपयोग कर पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी आवश्यकता जानने वाले संयमी और विवेकशील ग्राहक जरूरत की वस्तुएँ खरीदकर बाज़ार को सार्थकता देते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले आवश्यकता की स्पष्ट पहचान, फिर उसी के अनुसार खरीदारी का उल्लेख करें।

10(ग). 'पर्चेज़िंग पावर' का क्या तात्पर्य है? पर्चेज़िंग पावर का गर्व बाज़ार का क्या अहित करता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धन से वस्तुएँ खरीद सकने की क्षमता क्रयशक्ति कहलाती है; उसका अहंकार उपयोगी विनिमय को विकृत करता है।

चरण 1: पर्चेज़िंग पावर का अर्थ बताएँ पर्चेज़िंग पावर का तात्पर्य व्यक्ति की क्रयशक्ति, अर्थात अपने धन से वस्तुएँ खरीद सकने की क्षमता से है। यह अपने आप में अहितकारी नहीं है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति अपनी जरूरत समझने के स्थान पर इसी क्षमता का गर्व करता है।

चरण 2: अहंकार का अहित स्पष्ट करें क्रयशक्ति के गर्व में व्यक्ति पैसे को विनाशक, व्यंग्य और शैतानी शक्ति बना देता है। वह आवश्यकता के लिए नहीं, धन का प्रदर्शन करने और निरर्थक संचय के लिए खरीदता है। इससे बाज़ार का उपयोगी लेन-देन और वास्तविक लाभ नष्ट होता है तथा उसमें छल, लोभ और दिखावे का बाज़ारूपन बढ़ता है। गद्यांश में इसी शक्ति को व्यंग्य की शक्ति कहना बताता है कि धन का अनुचित उपयोग ग्राहक और व्यापार दोनों की सार्थकता मिटा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष पर्चेज़िंग पावर धन से खरीदने की क्षमता है; इसका गर्व बाज़ार की उपयोगिता घटाकर उसमें दिखावा, लोभ और विनाशकारी प्रवृत्ति बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: क्रयशक्ति की सामान्य परिभाषा और उसके गर्व के दुष्परिणाम को अलग-अलग स्पष्ट करें।

10(घ). 'बाज़ार का बाज़ारूपन' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का उद्देश्य जरूरत पूरी करना है; लोभ और प्रदर्शन के हावी होने पर उसका विकृत व्यावसायिक रूप सामने आता है।

चरण 1: कथन का संदर्भ समझें लेखक के अनुसार जो लोग यह नहीं जानते कि उन्हें क्या चाहिए, वे अपनी पर्चेज़िंग पावर के गर्व में खरीदारी करते हैं। उनके लिए वस्तु की उपयोगिता गौण और धन का प्रदर्शन प्रधान हो जाता है। ऐसे ग्राहक बाज़ार से न सच्चा लाभ लेते हैं, न उसे देते हैं।

चरण 2: बाज़ारूपन का अर्थ खोलें बाज़ार का बाज़ारूपन उसके उस विकृत रूप का सूचक है जिसमें आवश्यकता की पूर्ति के स्थान पर आकर्षण, दिखावा, छल और लाभ का लोभ प्रधान हों। वस्तुओं का मूल्य उनकी जरूरत से नहीं, ग्राहक को लुभाकर अधिक खरीदवाने की क्षमता से आँका जाने लगता है। इस प्रकार मानवीय उपयोगिता पीछे छूट जाती है। लेखक का आक्षेप वस्तुओं के सामान्य क्रय-विक्रय पर नहीं, उस मानसिकता पर है जो धन और आकर्षण को वास्तविक जरूरत से ऊपर रखती है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का बाज़ारूपन आवश्यकता-आधारित उपयोगी विनिमय की जगह धन के अहंकार, दिखावे, लोभ और छल का हावी होना है।

त्वरित सुझाव: बाज़ारूपन का अर्थ केवल व्यापार न लिखें; उसके पीछे के लोभ और दिखावे को स्पष्ट करें।

अथवा

10(क). अथवा: मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते कि झड़ना निश्चित है! सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो काल-देवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे! लेखक और पाठ के नाम का उल्लेख करते हुए बताइए कि गद्यांश में किस वनस्पति का उल्लेख है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश की पहचान उसके लेखक, पाठ के शीर्षक और उसमें उल्लिखित वनस्पति से की जाती है।

चरण 1: लेखक और पाठ बताएँ प्रस्तुत गद्यांश के लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं। यह उनकी निबंधात्मक रचना शिरीष के फूल से लिया गया है। लेखक प्रकृति के निरीक्षण के माध्यम से मानव जीवन में परिवर्तन, गति और जिजीविषा का महत्त्व स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: वनस्पति का उल्लेख पहचानें गद्यांश में शिरीष नामक वृक्ष का उल्लेख है। उसके फूलों तथा फलने के बाद भी डालियों से चिपके रहने वाले पुराने फलों के संदर्भ में लेखक परिवर्तन की अनिवार्यता समझाते हैं। पुराने का झड़ना और नए का स्थान लेना प्रकृति की प्रक्रिया है; इसी दृश्य से जीवन में जड़ होकर न रहने की सीख मिलती है। गद्यांश में महाकाल के कोड़ों का रूपक इसी परिवर्तन को व्यक्त करता है। दुर्बल का झड़ना और प्राणवान का टिकना लेखक के जीवन-दर्शन को भी सामने लाता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं, पाठ का नाम शिरीष के फूल है और उल्लिखित वनस्पति शिरीष का वृक्ष है।

त्वरित सुझाव: पहचान वाले प्रश्न में लेखक, पाठ और वनस्पति तीनों के नाम स्पष्ट रूप से लिखें।

10(ख). भोले किन्हें कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समय का प्रवाह निरंतर है; स्थिर रहकर परिवर्तन से बच निकलने की धारणा भोलापन है।

चरण 1: भोले कहे गए लोगों की पहचान करें लेखक ने उन मूर्ख और जड़ व्यक्तियों को भोले कहा है जो समझते हैं कि वे जहाँ जमे हुए हैं, वहीं लंबे समय तक बने रहकर काल-देवता की आँखों से बच जाएँगे। वे पुराने पद, स्थान या स्थिति को पकड़े रहने में ही सुरक्षा मानते हैं।

चरण 2: भोलापन कहने का कारण बताएँ ऐसे लोग भूल जाते हैं कि समय निरंतर बदलता है और जीर्ण तथा दुर्बल को हटा देता है। एक जगह जमकर रहना परिवर्तन से बचने का उपाय नहीं है। जीवन की प्राणधारा के साथ आगे बढ़ने और सक्रिय रहने में ही टिके रहने की संभावना है; इसलिए उनकी स्थायी बने रहने की धारणा नासमझी है। यहाँ भोले शब्द में व्यंग्य है। लेखक उनकी प्रशंसा नहीं करते, बल्कि समय की अनिवार्य शक्ति न समझने और व्यर्थ सुरक्षा खोजने की प्रवृत्ति पर चोट करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष परिवर्तन न अपनाकर एक स्थान पर जमे रहने से काल की मार बच जाने की आशा रखने वालों को उनकी इसी नासमझी के कारण भोले कहा गया है।

त्वरित सुझाव: भोले कौन हैं बताने के बाद समय के परिवर्तनशील स्वभाव से उनके भ्रम का कारण जोड़ें।

10(ग). आशय स्पष्ट कीजिए — हिलते-डुलते रहो, ... जमे कि मरे! [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीवन में सक्रियता, परिवर्तनशीलता और आगे बढ़ने की इच्छा जिजीविषा के चिह्न हैं।

चरण 1: गतिशीलता का आशय समझें हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो और आगे की ओर मुँह किए रहो का आशय केवल शारीरिक हलचल नहीं है। लेखक मनुष्य को समय के अनुरूप अपने विचार और व्यवहार बदलने, सक्रिय रहने तथा नई परिस्थितियों को स्वीकार करते हुए प्रगति करने की प्रेरणा देता है।

चरण 2: जमे कि मरे का अर्थ बताएँ जो व्यक्ति पुरानी स्थिति को पकड़कर जड़ बना रहता है, वह जीवन की प्रगतिशील धारा से कट जाता है। समय की मार से बचने के लिए जिजीविषा और ऊर्ध्वमुखी प्राणशक्ति आवश्यक हैं। इसलिए जमे कि मरे का अर्थ है कि जड़ता पतन और विनाश की ओर ले जाती है, जबकि गतिशीलता जीवन को बनाए रखती है। काल-देवता के कोड़ों का रूपक बताता है कि समय किसी के लिए रुकता नहीं। उसके साथ कदम मिलाने वाला ही जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का संदेश है कि समय के साथ बदलते और आगे बढ़ते रहना जीवन है; जड़ होकर एक स्थिति से चिपके रहना पतन और विनाश का कारण बनता है।

त्वरित सुझाव: हिलने-डुलने को वैचारिक सक्रियता और जमे रहने को जड़ता से जोड़कर भावार्थ लिखें।

10(घ). शिरीष के फूलों की वह विशेषता क्या है जिसके कारण लेखक को यह सब कहना पड़ा? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में शिरीष के कोमल फूलों और लंबे समय तक चिपके रहने वाले कठोर पुराने फलों का विरोध सामने आता है।
- नए फूल पुराने फलों को हटाते हैं; इससे जड़ता छोड़कर समय के साथ बदलने का संदेश निकलता है।

चरण 1: फूलों और पुराने फलों का अंतर शिरीष के फूल अत्यंत कोमल और मृदुल होते हैं, जबकि उसके पुराने फल कठोर होकर लंबे समय तक डालियों से चिपके रहते हैं। वे आसानी से अपनी जगह नहीं छोड़ते। नए फूल और पत्ते आने पर ही पुराने फलों को धकेलकर हटाते हैं। लेखक को यह बात विशेष रूप से ध्यान खींचती है कि इतना कोमल फूल भी पुराने, कठोर और जमे हुए फल को हटाकर नई सृष्टि का स्थान बनाता है।

चरण 2: गद्यांश में निहित संदेश पुराने फल अपनी जगह जमे रहने की जड़ता का प्रतीक हैं। नए फूलों की कोमलता के साथ उनकी यह परिवर्तनकारी शक्ति लेखक को समझाती है कि केवल अड़े रहना जीवन की सफलता नहीं है। समय बदलने पर पुराने को नए के लिए स्थान छोड़ना पड़ता है। इसी प्रसंग में लेखक हिलने-डुलने, स्थान बदलने और आगे की ओर देखते रहने की प्रेरणा देता है। नई जीवन-शक्ति अंततः पुरानी जड़ता को हटा देती है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के कोमल नए फूल कठोर, लंबे समय से चिपके पुराने फलों को धकेलकर हटा देते हैं। इसी विशेषता से लेखक को जड़ता छोड़कर समय के साथ बदलने और नए को स्थान देने की बात कहने की प्रेरणा मिली।

त्वरित सुझाव: इस गद्यांश के उत्तर में नए कोमल फूलों द्वारा पुराने कठोर फलों को हटाने की बात और परिवर्तन का संदेश जोड़ें।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए: "उनको यह नमक देते वक़्त मेरी तरफ़ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा। तो बाक़ी सब रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा।" 'नमक' कहानी में लाहौर के कस्टम अधिकारी के इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तीन तर्क दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विभाजन राजनीतिक सीमाएँ बना सकता है, पर स्मृतियों और आत्मीय संबंधों को तत्काल समाप्त नहीं कर सकता।
- कस्टम अधिकारी का कथन साझा संस्कृति तथा पारस्परिक विश्वास के आधार पर संबंध सुधरने की आशा व्यक्त करता है।

चरण 1: पहला तर्क: जन्मभूमि से आत्मीय लगाव मैं इस कथन के पक्ष में हूँ। पहला तर्क यह है कि मनुष्य का अपने पुराने वतन से संबंध केवल नागरिकता का नहीं होता। वहाँ बिताया बचपन, रिश्ते और जीवन के अनुभव उसके मन में बसे रहते हैं। सिख बीबी का लाहौर का नमक मँगाना दिखाता है कि भारत आने के बाद भी लाहौर के प्रति उनका लगाव बना हुआ है। अधिकारी इस लगाव को सम्मान देकर उन्हें पराया मानने से इनकार करता है।

चरण 2: दूसरा तर्क: दोनों ओर एक जैसी भावना दूसरा तर्क यह है कि लाहौर का कस्टम अधिकारी स्वयं देहली को अपना वतन मानता है। इस प्रकार सीमा के दोनों ओर लोग एक जैसी पीड़ा और अपनापन अनुभव करते हैं। जब वे एक-दूसरे की स्मृतियों का आदर करेंगे, तो विभाजन से उपजा अविश्वास घटेगा। कहानी का यह प्रसंग दिखाता है कि मानवीय संवेदना राष्ट्रीय सीमाओं के बावजूद जीवित है।

चरण 3: तीसरा तर्क: सद्भाव से संबंध सुधरने की संभावना तीसरा तर्क यह है कि अधिकारी नमक को केवल प्रतिबंधित वस्तु के रूप में नहीं देखता; वह उससे जुड़ी भावना को समझता है। ऐसा व्यवहार दूसरे समुदाय और देश के प्रति भरोसा बढ़ाता है। राजनीतिक मतभेद तुरंत समाप्त नहीं होते, लेकिन सहानुभूति, सांस्कृतिक निकटता और निरंतर सद्भाव से कटुता धीरे-धीरे कम हो सकती है। इसी अर्थ में अधिकारी की आशा उचित है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन के पक्ष में तीन आधार हैं: पुराने वतन से अटूट भावनात्मक संबंध, सीमा के दोनों ओर समान आत्मीयता और मानवीय सद्भाव से संबंधों के क्रमशः सुधरने की संभावना।

त्वरित सुझाव: पक्ष स्पष्ट लिखकर तीन अलग तर्क दें और हर तर्क को सिख बीबी या कस्टम अधिकारी के प्रसंग से जोड़ें।

11(ख). डॉ. भीमराव आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज की आधारभूत बातें संक्षेप में समझाइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर के आदर्श समाज का आधार स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता है।
- जीवंत समाज में सामाजिक गतिशीलता, अनुभवों का आदान-प्रदान और सबके लिए अवसर आवश्यक हैं।

चरण 1: स्वतंत्रता और समता डॉ. भीमराव आंबेडकर ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का विकास करने की स्वतंत्रता मिले। व्यवसाय जन्म या जाति से निर्धारित न हो; व्यक्ति अपनी रुचि और योग्यता के अनुरूप काम चुन सके। समता का अर्थ सबके साथ समान मानवीय व्यवहार तथा उन्नति के अवसर उपलब्ध कराना है। जन्म, वंश और जाति के कारण किसी को हीन मानना इस आदर्श के विरुद्ध है। समाज को वंचित लोगों के विकास में बाधा बनने वाली परिस्थितियाँ भी दूर करनी चाहिए।

चरण 2: भ्रातृता और सामाजिक संपर्क आदर्श समाज का दूसरा आवश्यक पक्ष भ्रातृता है। लोगों में एक-दूसरे के प्रति आदर, अपनापन और सहभागिता हो। समाज के किसी एक भाग में होने वाला परिवर्तन अन्य भागों तक पहुँच सके और अनेक हितों में सबकी भागीदारी हो। सामाजिक जीवन में स्वतंत्र संपर्क तथा विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान आवश्यक है। जातिगत बंदिशें लोगों को अलग-अलग खाँचों में बाँधती हैं, इसलिए वे इस गतिशीलता और परस्पर सहयोग को रोकती हैं।

चरण 3: लोकतांत्रिक जीवन-पद्धति आंबेडकर के लिए लोकतंत्र केवल शासन की व्यवस्था नहीं, बल्कि साथ मिलकर जीने और साझा अनुभवों को ग्रहण करने की पद्धति है। इसलिए आदर्श समाज में मनुष्य का सम्मान उसके जन्म से नहीं, उसके मनुष्य होने के कारण होना चाहिए। स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता एक-दूसरे की पूरक बनकर ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करती हैं जिसमें सभी लोग गरिमापूर्वक रह सकें।

चरण 4: निष्कर्ष आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित, जातिगत अवरोधों से मुक्त तथा सामाजिक संपर्क और समान अवसरों से संपन्न लोकतांत्रिक समाज है।

त्वरित सुझाव: तीनों आधारों के नाम लिखने के बाद व्यवसाय की स्वतंत्रता, समान अवसर और सामाजिक आदान-प्रदान से उनका अर्थ स्पष्ट करें।

11(ग). लेखक ने चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण किसे कहा है और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली की कला साधारण मनुष्य के दुःख और विवशता में हास्य खोजती है तथा स्वयं पर हँसने की दृष्टि देती है।
- भारतीय सिनेमा में राजकपूर ने इस दृष्टि को भारतीय सामाजिक परिस्थितियों और पात्रों से जोड़ा।

चरण 1: भारतीयकरण किसे कहा गया लेखक ने राजकपूर द्वारा अपनी फिल्मों में चार्ली की कला को भारतीय रूप देने को चार्ली का भारतीयकरण कहा है। विशेष रूप से फिल्म 'आवारा' में राजकपूर का साधारण, अभावग्रस्त और संघर्षशील नायक चार्ली की परंपरा को भारतीय जीवन से जोड़ता है। उसके हावभाव, चाल-ढाल और हास्यपूर्ण स्थितियों में चार्ली की छाप दिखाई देती है, लेकिन उसके संघर्ष भारतीय समाज की परिस्थितियों से जुड़े हैं। इसलिए यह केवल विदेशी कलाकार की बाहरी नकल नहीं रह जाती।

चरण 2: हास्य और करुणा का मेल चार्ली की तरह राजकपूर का पात्र भी अपने दुःख, असफलता और बेचारगी के बीच दर्शक को हँसाता है। दर्शक उसकी हरकतों पर हँसते हुए उसके प्रति सहानुभूति भी अनुभव करता है। इस प्रकार हास्य के भीतर करुणा बनी रहती है। साधारण मनुष्य अपनी कमियों और विपत्तियों के कारण हास्यास्पद दिखाई दे सकता है, फिर भी उसकी मानवीय गरिमा और संवेदना समाप्त नहीं होती। यही दृष्टि चार्ली की कला का महत्वपूर्ण पक्ष है।

चरण 3: भारतीय परिवेश में सार्थक रूपांतरण राजकपूर ने इस दृष्टि को भारतीय दर्शक के परिचित जीवन, गरीबी, सामाजिक विषमता और भावनात्मक संबंधों के बीच रखा। इससे चार्ली की आत्मपरिहास की कला भारतीय सिनेमा में अपना स्थानीय रूप प्राप्त करती है। स्वयं पर हँसने वाला नायक दर्शक को भी अपने जीवन की विसंगतियों को देखने का अवसर देता है। लेखक इसी भारतीय संदर्भ और संवेदनात्मक रूपांतरण के कारण राजकपूर के प्रयोग को चार्ली का भारतीयकरण मानता है।

चरण 4: निष्कर्ष राजकपूर ने 'आवारा' में चार्ली की स्वयं पर हँसने वाली, हास्य और करुणा से युक्त अभिनय-दृष्टि को भारतीय जीवन के अनुरूप ढाला; लेखक ने इसी को चार्ली का भारतीयकरण कहा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में राजकपूर और 'आवारा' का उल्लेख करके बताएँ कि हास्य, करुणा और भारतीय सामाजिक जीवन कैसे जुड़े हैं।

11(घ). 'इंदर सेना' क्या थी? जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस प्रकार सही ठहराया? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंदर सेना वर्षा की कामना करने वाले गाँव के किशोर लड़कों की टोली थी।
- जीजी पानी डालने को त्याग, दान और सामूहिक कल्याण की भावना से जोड़कर उचित ठहराती हैं।

चरण 1: इंदर सेना का परिचय इंदर सेना गाँव के किशोर लड़कों का समूह था, जो सूखे और वर्षा के अभाव में इंद्र देवता से पानी माँगता हुआ घर-घर जाता था। लड़के उछलते-कूदते, कीचड़ में लथपथ होकर वर्षा की पुकार लगाते थे। घरों से उनके ऊपर पानी डाला जाता था। सामान्य लोग इस टोली को मेंढक-मंडली भी कहते थे, लेकिन यह समूह स्वयं को इंद्र की सेना मानता था। इस लोक-परंपरा में वर्षा की सामूहिक आकांक्षा प्रकट होती है।

चरण 2: पानी फेंकने पर आपत्ति का उत्तर लेखक को लगता था कि पानी की कमी के समय इस तरह पानी फेंकना व्यर्थ की बरबादी है। जीजी इसे केवल पानी गँवाना नहीं मानतीं। उनके अनुसार किसी प्रिय और आवश्यक वस्तु का त्याग करना ही सच्चा दान है। पानी की सबसे अधिक आवश्यकता होने पर भी उसमें से कुछ देना इंद्र को अर्घ्य देने जैसा है। वह इसे वर्षा की प्रार्थना और सबके हित की कामना से जुड़ा धार्मिक-सांस्कृतिक कर्म समझती हैं।

चरण 3: बीज के उदाहरण से औचित्य जीजी किसान के बीज बोने का उदाहरण देती हैं। किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपने पास के कुछ दाने जमीन में डालता है; वह उन्हें नष्ट करना नहीं, अधिक अन्न पाने के लिए आवश्यक त्याग मानता है। इसी प्रकार थोड़े पानी का दान बहुत-सी वर्षा की आशा से किया जाता है। जीजी का तर्क आस्था और लोकविश्वास पर आधारित है। इसमें व्यक्तिगत संग्रह से ऊपर उठकर देने और सामूहिक मंगल की भावना प्रमुख है।

चरण 4: निष्कर्ष इंदर सेना वर्षा के लिए प्रार्थना करती किशोरों की टोली थी। जीजी ने उस पर पानी डालने को आवश्यक वस्तु के त्याग, इंद्र को अर्घ्य और बीज बोने की तरह अधिक पाने के लिए देने की भावना के आधार पर उचित बताया।

त्वरित सुझाव: इंदर सेना का परिचय अलग दें और जीजी के तर्क में दान तथा किसान के बीज वाले उदाहरण को अवश्य शामिल करें।

11(ङ). "भक्तिन अच्छी है — यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।" लेखिका के इस कथन के आलोक में भक्तिन के चरित्र की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में गुण और कमजोरियाँ, दोनों प्रसंगों से स्पष्ट किए जाते हैं।
- भक्तिन की निष्ठा, स्वाभिमान और व्यावहारिक दुर्बलताएँ उसके व्यक्तित्व को सजीव बनाती हैं।

चरण 1: निष्ठावान और आत्मीय सेविका भक्तिन लेखिका की सेवा को केवल आजीविका का साधन नहीं मानती। वह उनके भोजन, स्वास्थ्य और सुविधा की चिंता करती है तथा उनके जीवन में आत्मीय सहयोगी बन जाती है। विपरीत परिस्थितियों में भी वह लेखिका का साथ छोड़ने को तैयार नहीं होती। यह समर्पण उसके स्नेह और विश्वास का प्रमाण है।

चरण 2: स्वाभिमानी और अपने मत पर दृढ़ भक्तिन की अपनी मान्यताएँ हैं और वह उन्हें सहजता से छोड़ती नहीं। लेखिका से आत्मीय संबंध रखते हुए भी उसका व्यक्तित्व दबता नहीं। अपने रहन-सहन और भोजन संबंधी आदतों को उचित सिद्ध करने की उसकी प्रवृत्ति में

स्वाभिमान के साथ हठ भी दिखाई देता है। वह निष्क्रिय आज्ञापालक पात्र नहीं है।

चरण 3: दुर्बलताओं को तर्क से उचित ठहराना इधर-उधर रखे पैसे वह मटकी में सँभाल देती है, पर इसे चोरी मानने को तैयार नहीं होती। लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बात बदलना भी उसके लिए असत्य नहीं है। दूसरों की बातों की आलोचना करने की प्रवृत्ति भी उसमें है। इन प्रसंगों से पता चलता है कि उसमें छोटी मानवीय कमजोरियाँ हैं, जिन्हें वह अपने तर्कों से उचित बताती है।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन निष्ठावान, स्वाभिमानी और आत्मीय है; साथ ही हठ तथा अपनी गलतियों को उचित ठहराने जैसी कमजोरियाँ भी उसमें हैं। इसलिए उसे पूर्णतः निर्दोष कहना कठिन है।

त्वरित सुझाव: तीन विशेषताएँ लिखते समय हर विशेषता के साथ पाठ का अलग प्रसंग जोड़ें और कथन में निहित कमजोरियों का भी उल्लेख करें।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'जूझ' कहानी के आधार पर लेखक में कविता के प्रति रुचि जगाने और कविता करना सिखाने में उसके अध्यापक के योगदान को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अध्यापक का आदर्श वाचन और प्रोत्साहन विद्यार्थी की छिपी रचनात्मक प्रतिभा विकसित करते हैं।
- उत्तर में कविता के प्रति आकर्षण और कविता रचना की प्रक्रिया, दोनों का योगदान स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: कविता का सजीव अनुभव कराना सौंदलगेकर मास्टर कविता पढ़ाते समय उसके भावों में तल्लीन हो जाते थे। उनका लयपूर्ण, भावपूर्ण वाचन कविता को केवल पाठ्यपुस्तक की सामग्री नहीं रहने देता था। वे कविता का आनंद स्वयं लेते और विद्यार्थियों को भी उसका अनुभव कराते थे। उनकी इस शैली से लेखक के मन में कविता के प्रति गहरी रुचि जागी।

चरण 2: रचना के प्रति आत्मविश्वास जगाना अध्यापक अपने अनुभव और अपनी रचनाओं की चर्चा भी करते थे। लेखक को समझ आया कि कवि भी सामान्य मनुष्य होते हैं और आसपास की वस्तुएँ तथा अनुभव कविता के विषय बन सकते हैं। इस बोध से उसके मन की झिझक टूटी। वह खेती के काम करते हुए भी कविताएँ गुनगुनाने और नए शब्द जोड़कर रचना का अभ्यास करने लगा।

चरण 3: अभ्यास को दिशा देना लेखक अपनी बनाई कविताएँ अध्यापक को दिखाता था। अध्यापक उन्हें ध्यान से सुनते, प्रोत्साहन देते और सुधार का मार्ग बताते थे। इससे लेखक को शब्द, लय और भाव के मेल का व्यावहारिक ज्ञान मिला। शिक्षक की आत्मीय प्रतिक्रिया ने उसके आरंभिक प्रयासों को महत्व दिया और उसे निरंतर कविता रचने का साहस प्रदान किया।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर मास्टर ने भावपूर्ण वाचन से लेखक की रुचि जगाई और प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन से उसे कविता रचना का आत्मविश्वास और अभ्यास दिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर को वाचन, आत्मविश्वास और रचनात्मक मार्गदर्शन के क्रम में रखें, ताकि शिक्षक के योगदान के दोनों पक्ष स्पष्ट हों।

12(ख). "किशन दा को अपना आदर्श मानने के फेर में यशोधर नई पीढ़ी के साथ भी तालमेल नहीं बिठा पाते।" इस कथन की पुष्टि कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू के मूल्यबोध पर किशन दा की जीवन-पद्धति का गहरा प्रभाव है।
- कथन की पुष्टि के लिए आदर्शों के प्रभाव को नई पीढ़ी के व्यवहार से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: किशन दा का स्थायी प्रभाव किशन दा की सादगी, अनुशासन और परंपरागत जीवन-दृष्टि यशोधर बाबू के लिए आदर्श हैं। वे बदलती परिस्थितियों का मूल्यांकन भी उन्हीं संस्कारों के आधार पर करते हैं। इस कारण वे नए व्यवहारों को सहज रूप से स्वीकार नहीं

कर पाते और पुरानी जीवन-पद्धति को अधिक उचित मानते रहते हैं।

चरण 2: नई जीवनशैली से दूरी यशोधर बाबू के बच्चे आधुनिक पहनावे, उपभोग और उत्सव के तौर-तरीकों को अपनाते हैं। घर में विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आयोजन भी उनके लिए सहज प्रसन्नता का अवसर नहीं बन पाता। उन्हें इस तरह की पार्टी और प्रदर्शन अपने परिचित संस्कारों से भिन्न लगते हैं। पत्नी भी बच्चों की जीवनशैली से अपेक्षाकृत अधिक तालमेल बिठा लेती हैं, जिससे उनका अकेलापन बढ़ता है।

चरण 3: आत्मीयता को समझने में कठिनाई बच्चों की सफलता और उनके उपहारों में स्नेह होने पर भी यशोधर बाबू उनके व्यवहार में अपनी मान्यताओं से विचलन देखते हैं। किशन दा के आदर्शों से बँधे रहने के कारण वे नई पीढ़ी की परिस्थितियों और अभिव्यक्ति के ढंग को पूरी तरह नहीं समझ पाते। परिणामत: घर में रहते हुए भी वे मानसिक दूरी और असमंजस अनुभव करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष किशन दा की जीवन-दृष्टि को अपरिवर्तनीय आदर्श मान लेने से यशोधर बाबू नई पीढ़ी के बदलते रहन-सहन और स्नेह व्यक्त करने के तरीकों के साथ सहज तालमेल नहीं बिठा पाते।

त्वरित सुझाव: किशन दा के आदर्शों का उल्लेख करने के बाद सिल्वर वैडिंग के आयोजन को पीढ़ियों के अंतर के ठोस उदाहरण की तरह जोड़ें।

12(ग). यह कैसे कहा जा सकता है कि सिंधु-सभ्यता में भव्यता का आडंबर नहीं था? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता की विशेषता उसके नगर-विन्यास, कलाकृतियों और सार्वजनिक सुविधाओं से पहचानी जाती है।
- भव्यता का आडंबर न होने का अर्थ समृद्धि का अभाव नहीं, बल्कि शक्ति और वैभव के प्रदर्शन का अभाव है।

चरण 1: राजसत्ता के प्रदर्शन का अभाव सिंधु सभ्यता के अवशेषों में विशाल राजमहलों, भव्य राजसमाधियों अथवा सत्ता का आतंक स्थापित करने वाले स्मारकों का वैसा प्रदर्शन नहीं मिलता जैसा अनेक दूसरी प्राचीन सभ्यताओं में दिखाई देता है। यहाँ किसी सम्राट की विराट मूर्ति या उसकी विजय का महिमामंडन नगर की मुख्य पहचान नहीं बनता। इससे सत्ता-केंद्रित आडंबर का अभाव स्पष्ट होता है।

चरण 2: नागरिक सुविधाओं पर ध्यान मोहनजोदड़ो का सुव्यवस्थित नगर-विन्यास, जल-निकासी की व्यवस्था, कुएँ और स्नानागार बताते हैं कि जीवन की उपयोगी सुविधाओं को महत्व दिया गया था। निर्माण में व्यवस्था, सफाई और सामुदायिक जीवन की जरूरतें प्रमुख थीं। नगर की उत्कृष्टता केवल किसी शासक का वैभव दिखाने के लिए नहीं, नागरिक जीवन को व्यवस्थित बनाने में दिखाई देती है।

चरण 3: कला में संयम और सुरुचि मूर्तियों, मुहरों और अन्य कलावस्तुओं में कलात्मक निपुणता तथा सूक्ष्म सौंदर्यबोध मिलता है। उनका महत्व विशाल आकार अथवा चमत्कृत कर देने वाले प्रदर्शन में नहीं है। इस सभ्यता की विशेषता उसकी सुघड़ता और जीवन से जुड़ी कलात्मकता है। इसी कारण लेखक इसे समझ और सुरुचि वाली सभ्यता के रूप में प्रस्तुत करता है।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता में समृद्धि और कलात्मकता थी, पर उनका रूप संयमित था। सार्वजनिक सुविधाओं, सुव्यवस्था और सुरुचि की प्रधानता से कहा जा सकता है कि उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।

त्वरित सुझाव: राजमहलों के अभाव के साथ नागरिक सुविधाओं और सूक्ष्म कलात्मकता के उदाहरण अवश्य दें; सादगी को निर्धनता न बताएँ।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: ऐन फ्रेंक ने अपनी डायरी किट्टी को संबोधित कर क्यों लिखी होगी? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी व्यक्तिगत अनुभूतियों और उन विचारों की अभिव्यक्ति है जिन्हें व्यक्ति सबके सामने नहीं कह पाता।

- किट्टी को संबोधन देने से ऐन की डायरी एक विश्वासपात्र सखी के साथ संवाद का रूप लेती है।

चरण 1: विश्वासपात्र सखी की आवश्यकता ऐन के आसपास परिचित लोग और परिवार के सदस्य थे, पर उसे ऐसी आत्मीय सखी का अभाव अनुभव होता था जिससे वह अपने मन की हर बात कह सके। वह अपनी भावनाओं, उलझनों और अनुभवों को बिना संकोच व्यक्त करना चाहती थी। इसलिए उसने डायरी को किट्टी नाम देकर एक निकट मित्र का रूप दिया।

चरण 2: अकेलेपन में मन का सहारा युद्ध, यहूदियों पर अत्याचार और छिपकर रहने की परिस्थितियों में ऐन का जीवन भय तथा प्रतिबंधों से घिरा था। किट्टी को संबोधित करते हुए वह अपने सुख-दुःख, आशाओं और आशंकाओं को व्यक्त कर सकती थी। इस काल्पनिक सखी से संवाद उसे भावनात्मक सहारा देता था और डायरी लेखन को अधिक सहज तथा आत्मीय बना देता था।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन ने डायरी किट्टी को संबोधित की ताकि वह उसे विश्वासपात्र सखी मानकर अपने मन की बातें कह सके और कठिन परिस्थितियों में अपना अकेलापन बाँट सके।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लोगों की अनुपस्थिति के बजाय मन की बात समझने वाली विश्वासपात्र सखी के अभाव को मुख्य कारण बनाएँ।

13(ख). मुअनजो-दड़ो कहाँ है तथा क्यों प्रसिद्ध है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुअनजो-दड़ो का परिचय उसके वर्तमान भौगोलिक स्थान और सिंधु सभ्यता के पुरातात्त्विक महत्त्व को जोड़कर दिया जाता है।
- नगर के अवशेषों से उसकी सुव्यवस्थित नागरिक व्यवस्था और विकसित जीवन-संस्कृति का पता चलता है।

चरण 1: स्थान का परिचय मुअनजो-दड़ो वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है। यह सिंधु नदी की घाटी में विकसित प्राचीन सिंधु सभ्यता का एक प्रमुख नगर था। इसलिए इसके स्थान का उत्तर देते समय केवल पाकिस्तान कहना पर्याप्त परिचय नहीं देता; सिंध प्रांत और सिंधु सभ्यता का उल्लेख भी करना चाहिए।

चरण 2: प्रसिद्धि का कारण यह अपने अत्यंत प्राचीन और योजनाबद्ध नगर के अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की सीधी सड़कें, पक्की ईंटों के मकान, ढकी हुई नालियाँ और विशाल सार्वजनिक स्नानागार विकसित नगर-निर्माण तथा स्वच्छता-बोध के प्रमाण हैं। इन अवशेषों से उस सभ्यता के व्यवस्थित सामुदायिक जीवन का परिचय मिलता है। पाठ में लेखक इन्हीं अवशेषों के माध्यम से अतीत के जीवन को अनुभव करता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत में है और सिंधु सभ्यता के सुव्यवस्थित प्राचीन नगर तथा उसके पुरातात्त्विक अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले वर्तमान स्थान लिखिए, फिर नालियों, सड़कों और स्नानागार जैसे ठोस प्रमाणों से प्रसिद्धि स्पष्ट कीजिए।

13(ग). 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर 'जो हुआ होगा' कथन के दो अर्थ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन का सामान्य अर्थ और प्रसंग से निकलने वाला व्यंजित अर्थ अलग-अलग स्पष्ट करना आवश्यक है।
- किशनदा की मृत्यु का प्रसंग अकेले व्यक्ति की सामाजिक उपेक्षा तथा यशोधर बाबू की संवेदना को सामने लाता है।

चरण 1: कथन का सामान्य अर्थ किशनदा की मृत्यु के कारण के संबंध में कहा गया कथन 'जो हुआ होगा' एक अनिश्चित उत्तर है। इसका पहला अर्थ है कि उन्हें कोई बीमारी या दूसरी शारीरिक तकलीफ हुई होगी, पर मृत्यु का ठीक कारण बताने वाले को मालूम नहीं है। उत्तर देने वाला कारण की जानकारी देने के बजाय बात को अनिश्चित ही छोड़ देता है।

चरण 2: कथन का मार्मिक अर्थ दूसरा अर्थ किशनदा के अकेलेपन और उपेक्षा से जुड़ा है। यशोधर बाबू के लिए यह मृत्यु केवल किसी अज्ञात रोग का परिणाम नहीं रह जाती; उसमें बदलते समय के साथ सामंजस्य न बैठा पाने से उत्पन्न एकाकीपन, अपनत्व का अभाव और मानसिक पीड़ा भी निहित है। किशनदा अपनी पुरानी जीवन-पद्धति से जुड़े रहे और नई परिस्थितियों में स्वयं को ढाल नहीं पाए। जिन किशनदा से उनका आत्मीय संबंध था, उनकी मृत्यु के बारे में ऐसा अस्पष्ट उत्तर उन्हें दुखी करता है। कथन में यह भी प्रकट होता है कि अकेले व्यक्ति के साथ क्या बीती, यह जानने की चिंता तक समाज ने नहीं की।

चरण 3: निष्कर्ष 'जो हुआ होगा' का एक अर्थ मृत्यु के अज्ञात शारीरिक कारण से है; दूसरा अर्थ बदलते समय के अनुरूप न ढल पाने से उत्पन्न किशनदा के अकेलेपन, उपेक्षा और मानसिक पीड़ा से है।

त्वरित सुझाव: दो अर्थ लिखते समय अज्ञात बीमारी या कारण को पहले और अकेलेपन तथा उपेक्षा के मार्मिक संकेत को दूसरे स्थान पर रखिए।

---

14. ऐन फ्रेंक ने अपनी डायरी में नारी-स्वतंत्रता की जो कल्पना की है, आज उस स्थिति में कितना परिवर्तन आया है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन की नारी-स्वतंत्रता की कल्पना में स्त्री का सम्मान, समान अधिकार और अपने जीवन के निर्णय लेने की स्वतंत्रता शामिल है।
- तुलनात्मक उत्तर में ऐन के विचार, वर्तमान प्रगति, उसके ठोस उदाहरण और बची हुई असमानता पर संतुलित विचार देना चाहिए।

चरण 1: ऐन की कल्पना स्पष्ट कीजिए ऐन फ्रेंक स्त्रियों को पुरुषों से कम समझने की प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाती है। उसके अनुसार स्त्रियों का योगदान, विशेषकर संतान को जन्म देने और उसका पालन-पोषण करने का कार्य, अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, फिर भी उन्हें उचित सम्मान नहीं मिलता। वह चाहती है कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार मिलें और उन्हें अपनी योग्यता विकसित करने का अवसर मिले। उसकी कल्पना केवल घर से बाहर काम करने की छूट तक सीमित नहीं है; उसमें स्त्री के व्यक्तित्व, श्रम और स्वतंत्र विचार का आदर भी है।

चरण 2: परिवर्तन के उदाहरण दीजिए ऐन के समय की तुलना में आज महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। शिक्षा के प्रसार से वे उच्च अध्ययन और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। वे अध्यापन और चिकित्सा के साथ विज्ञान, प्रशासन, रक्षा, खेल तथा अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में भी योगदान दे रही हैं। कल्पना चावला का अंतरिक्ष-यात्रा में योगदान और महिला खिलाड़ियों की अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियाँ उनकी क्षमता के स्पष्ट उदाहरण हैं। भारत में महिलाओं को मतदान और चुनाव लड़ने का अधिकार है; स्थानीय स्वशासन में उनका प्रतिनिधित्व भी सार्वजनिक निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ाता है। अनेक महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर अपने जीवन के फैसले ले रही हैं।

चरण 3: शेष असमानताओं का मूल्यांकन कीजिए फिर भी ऐन की कल्पना पूरी तरह साकार नहीं हुई है। कई परिवारों में लड़कियों की शिक्षा, विवाह और व्यवसाय के निर्णय उनकी इच्छा के बिना किए जाते हैं। घरेलू काम और बच्चों की देखभाल का दायित्व प्रायः महिलाओं पर अधिक रहता है। दहेज, घरेलू हिंसा, असुरक्षा और कार्यस्थल पर भेदभाव जैसी समस्याएँ उनकी वास्तविक स्वतंत्रता को सीमित करती हैं। इसलिए कुछ सफल महिलाओं के उदाहरण देखकर सभी महिलाओं की स्थिति को समान रूप से स्वतंत्र मान लेना उचित नहीं होगा। अवसरों का लाभ ग्रामीण, निर्धन और वंचित महिलाओं तक भी समान रूप से पहुँचना चाहिए।

चरण 4: सार्थक स्वतंत्रता का आधार बताइए ऐन के सपने को पूरा करने के लिए कानूनी अधिकारों के साथ सामाजिक व्यवहार बदलना भी आवश्यक है। लड़कियों की निर्बाध शिक्षा, सुरक्षित वातावरण, समान अवसर और घरेलू उत्तरदायित्वों का साझापन स्वतंत्रता को वास्तविक बना सकते हैं। महिलाओं की उपलब्धियों के साथ उनके रोजमर्रा के श्रम और निर्णयों का सम्मान करना भी उतना ही आवश्यक है।

चरण 5: निष्कर्ष आज शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से ऐन की कल्पना की दिशा में पर्याप्त प्रगति हुई है। फिर भी सामाजिक भेदभाव और असुरक्षा के कारण पूर्ण समानता अभी प्राप्त नहीं हुई; अधिकारों को व्यवहार में उतारना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय ऐन की अपेक्षा, वर्तमान उपलब्धियों के उदाहरण और बची हुई बाधाएँ तीनों लिखिए; केवल प्रशंसा या केवल समस्याओं तक सीमित न रहें।

अथवा

14. 'जूझ' कहानी के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी रचना के शीर्षक का औचित्य उसके केंद्रीय भाव, प्रमुख घटनाओं और नायक के जीवन से उसके संबंध के आधार पर स्पष्ट किया जाता है। 'जूझ' का अर्थ है कठिन परिस्थितियों से लगातार संघर्ष करना।
- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना में शिक्षा पाने की आकांक्षा और साहित्य के प्रति लगाव विपरीत पारिवारिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से टकराते हैं। यही संघर्ष रचना को एक सूत्र में बाँधता है।

चरण 1: शिक्षा के लिए संघर्ष 'जूझ' का शीर्षक कथानायक आनंद के विद्यार्थी बनने के संघर्ष को व्यक्त करता है। उसके पिता खेती के काम में उससे सहायता लेना चाहते हैं और उसकी पढ़ाई छुड़ा देते हैं। आनंद के लिए खेती करते रहना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है; वह पढ़कर अपनी स्थिति बदलना चाहता है। इसलिए विद्यालय में लौटने की इच्छा उसके भीतर निरंतर बनी रहती है। वह माँ के साथ दत्ता जी राव के पास जाकर अपनी समस्या रखता है। उनके हस्तक्षेप से पिता उसे पढ़ने की अनुमति देते हैं। फिर भी विद्यालय जाना सहज नहीं होता; उसे खेती और घर के काम के साथ पढ़ाई की जिम्मेदारी निभानी पड़ती है।

चरण 2: विद्यालय की कठिनाइयों पर विजय लंबे अंतराल के बाद विद्यालय लौटने पर भी आनंद का संघर्ष समाप्त नहीं होता। उसकी ग्रामीण वेशभूषा और पिछड़ी हुई पढ़ाई के कारण आरंभ में उसे संकोच तथा उपहास सहना पड़ता है। वह निराश होकर पढ़ाई छोड़ने के बजाय परिश्रम करता है। वसंत पाटील की पढ़ाई के प्रति लगन उसे प्रेरित करती है। धीरे-धीरे अपनी मेहनत और व्यवहार से वह कक्षा में स्थान बनाता है। यहाँ 'जूझ' केवल बाहरी विरोध से लड़ने का नाम नहीं, अपने संकोच और हीनता की भावना पर विजय पाने का भी संकेत है।

चरण 3: साहित्यिक व्यक्तित्व का विकास न. वा. सौंदलगेकर के काव्यपाठ से आनंद के भीतर कविता के प्रति रुचि जागती है। वह कविता का आनंद लेने के साथ स्वयं रचना करने का अभ्यास भी करता है। खेतों में काम करते हुए कविताएँ गुनगुनाना और नए भावों को शब्द देना उसकी साधना बन जाते हैं। श्रम, समय की कमी और प्रतिकूल वातावरण के बीच वह अपनी सृजनशीलता को बचाए रखता है। इस प्रकार रचना में एक विद्यार्थी और भावी साहित्यकार के निर्माण का संघर्ष साथ-साथ चलता है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः 'जूझ' शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक और पूरी रचना के केंद्रीय भाव का प्रतिनिधि है। आनंद शिक्षा और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए पारिवारिक बाधाओं, कठोर श्रम तथा अपने संकोच से जूझता है। उसकी संघर्षशीलता और आगे बढ़ने की दृढ़ इच्छा ही इस शीर्षक का औचित्य सिद्ध करती हैं।

त्वरित सुझाव: शीर्षक का औचित्य लिखते समय 'जूझ' का अर्थ बताकर शिक्षा, विद्यालय और काव्य-साधना से जुड़ी घटनाओं को उसी केंद्रीय संघर्ष से जोड़िए।